

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

एतन्महावीरसत्वाय ॥ कर्मासु लक्ष्मणादहम् ॥ अथान्यनकर्मवक्तुं नृणां निर्धयलक्ष्मीसुखीनी
नचवाच्यं निमित्तलक्ष्यसूची ॥ ॥ अथनलितमस्तुमनूषा लोकाः मृत्पुत्रकक्षीलाय ग्वनधूमन
यग्यानी लोकनसियशुभा ॥ गत्य धानसाथव अनीनया निमित्तलक्ष्यसूची ॥ १ ॥ पादगालकाविक
ध्यानं नाशमधाय दारुवक्तुं ॥ अथदिवक्ष्येनादृष्टचरुगुरुकथयामि ॥ ॥ पालिन्याप्यंथकनारिः श्वकनजः
मालायावस्यायुःशुभा ॥ अथमनूषाः श्वकनहस्तमृत्पुत्रकथयामि ॥ २ ॥ कृद्विषयचयाका नृण्यकाले रुद्विद्वि
कस्यामवद्विषलायां मृत्पुत्रवर्धननस्यकि ॥ ॥ मलमृत्पुत्रकाले श्वकनापनाडाउननामं श्वकपूत्रवः

रुवकृकं शुक्रायां प्रमिपरिष्ठोषहिमासेरुदामृष्टु नारिकं व्याधिषु चकं ॥ १० ॥ खनषमनयायावीरु
 हाकृसंनयिव विहाषन मुकयकृया पादूषूकं थथरुनदाव पूनान हामृष्टु रुय ॥ रुनं द्वा दूर्यजनसाम
 हाव्याधिनं कयिअरुना ॥ ९ ॥ चकृषीं हुमानि र्ण्ड दूर्यधियचिमुम थदप्यल्लुनिलवधिसु रुयां योन
 यथामि ॥ ॥ मिखानपिचनवयिअ लखसथव कपासखव थथरुनदाव नरुिन हामृष्टु रुना ॥ १० ॥
 नाद्रि विन्दुधनय ह्यदीनन कृम सुलं आभयविशुर्क य ह्यत्सु नंकिदक्रि ह्यमिगा ॥ ॥ नाद्रि सन्नु
 याधनखनिव दीनसन कृम सुल खनिअ आकाहास मयम सुल प्रपसा काअखनिव रुनं दक्रि ह्यदि ह्यमिगा

अनखनिरुना थथरुनदाव नरुिन हामृष्टु रुय ॥ ११ ॥ दिवाकृया पथपस्व डल्कायां पामं रुवकृ
 हंसका कमयूगा ह्यथ दकं रुमलकं ॥ ॥ दीनसंको ओहाहा सचादनाखनीव डलक वाअखनिअ रुना
 हंसका कमयून थस्वनाय चादखनिव रुना खनसान क्रिन हामृष्टु रुय ॥ १२ ॥ चन्द्रमादयं सूर्यच ह्यीगा
 कलनगथा गन्धर्वनगनं य ह्यत्सु वक्रा गुह्यिष नंगिना ॥ ॥ चन्द्रमानि सूर्यनि स्रखनिअ रुनं डनक वा
 अखनिव थवहीनस ऊदामकूटखनीव रुन गन्धर्वयानगनखनीअ मिमाया वासु पर्वतया वास आकाहाथथ
 इलहाअ नकीन हामृष्टु रुय ॥ १३ ॥ प्रकप ह्यतिष्ठ वा द्वा ह्यन्न न्या ह्यरीष नागु पकम्य कज्जकस्मात्स

द्दिक्चक्रहोत्रहोत्रा ॥ १४ ॥ अथ कपिष्ठावरुणादिनेखनीव कपशयुजावचमस्तु या नका कथायवथथशुनदा
 वः नदिनहोमृत्तुशुजा ॥ १५ ॥ कलंकलहिनं चर्दुः सूर्यवस्मि विवर्जिनी नाशु सूर्यादिवाचदुःस्वभृदुक्तनन
 कथा ॥ १६ ॥ कनकमनूवचदुःसासः कजमदुःसूर्यः रुचं नाशु सूर्यः दीनसचदुःसाखनिवथवमिखासकाति
 मखनिवथथशुनदावः मृत्तुशुयानिमिरुमियशुला ॥ १७ ॥ नात्राभनूपमानचः समुद्रचनदिमिवः मृदुप
 विषया शुक्रः तुल्यकालयकनिवः पकमकुरुवमृत्तुयदिधर्मनहावग ॥ १८ ॥ रुचं नात्राभनूपमाननखनि
 वः समुद्रचदीत्यः रुनीवः रुचं मलः मृदुवीरुः थसको नापययिवथथशुनदाशः वादिनहोमृत्तुशुयुजा

थकडपाययाकसासुत्तुलीक्यायजिडा ॥ १९ ॥ कनापिदिवहापव्याल्लुयायाचवचनूपीनिस्वमिनाशुः
 दर्शनानकः सुत्तुल्लोद्वषमध्वकथा ॥ २० ॥ दीनसकिपाकायिसंखनीवः किपासथवमिनमखनिवथमया
 ददिनहोमृत्तुशुजा ॥ २१ ॥ फुरुगार्याविनासत्याः वासयाल्लोद्वषमध्वकथा ॥ २२ ॥ फुरुगार्याविनासत्याः वासयाल्लोद्वषमध्वकथा
 दिनांमहोयसा ॥ २३ ॥ थअकपासदपात्राहकमदयवथथशुनसाकायमाचोमृत्तुशुयुदुचं रुजापोत्रा
 कमदकसाः मकडाकः मृत्तुशुयुजा ॥ २४ ॥ थअकपासदपात्राहकमदयवथथशुनसाकायमाचोमृत्तुशुयुदुचं रुजापोत्रा
 दः मृत्तुषटमासध्वकथा ॥ २५ ॥ मृत्तुल्लोद्वषमध्वकथा ॥ २६ ॥ मृत्तुल्लोद्वषमध्वकथा ॥ २७ ॥ मृत्तुल्लोद्वषमध्वकथा

भावयिष्यः हृत्वं पादूस्वादश्रुयुः श्वस्रूषू नानका मृत्तुयुः १९ ॥ वाचूकारुस्माजीवा विहानवष्टिमवच
 स्वप्राकथसिनाहृत् मलमर्जचपूर्ववक ॥ ॥ स्त्रानरुस्मावहिविदानसचनसः वस्त्रयाज्जदिः चूनकाखटा
 धकस्वपनसखनिवः थथश्रुनडाजः कायोधयाथमृत्तुयुः २० ॥ गदहृत्वावनंयाचूदः वात्मीकंयासूना
 सिनयाहिनाहृत् स्वप्राकं दक्षिणादिहिनीयतां ॥ ॥ गवनषूमनूष्यनः गाधूः खिचाः सपानिनकूदडाजः
 चादखटाधकमृत्तुयुः हृत्वं गाधूज्जदिगयाश्रुयाधकमृत्तुयुः हृत्वं दक्षिणादिहिनीयतां ॥ ॥ गवनषूमनूष्यनः गाधूः खिचाः सपानिनकूदडाजः
 नृषू नानका मृत्तुयुः २१ ॥ कृष्णवस्तुयुनातीः कालिकामयनननशकाननाहिदुसाश्रुयाः नाकूकयम

म २

मा ४

दर्शनं ॥ ॥ गवनषूमनूकनः हाकवस्तुनं गियावजमिस्तुनजकामयाठधकमृत्तुयुः श्वस्रू कालधायश्वस्रू
 मनूष्यः यमदर्शनयाकजनिवश्रुतां २२ ॥ स्त्रानकाकगृध्रानूः अकाकृष्टपयिष्ठाचकृष्टरुत्तुयुः स्वस्वप्रपथक
 नृकवर्षननिस्त्रिगं ॥ ॥ खिचाकाखः गृध्रसाः श्रुनूः थकपिष्ठावथकृष्टनः थडागुहानीनरुत्तुयुः नयाकधकस्वप्रा
 कनसखनिडाः श्वस्रूमनूष्यदक्षिणकामृत्तुयुः २३ ॥ नकवस्तुयुनिफंगः नकृत्वाविरुषहृष्टनलायकयदास्व
 प्रः पत्मासाधनजिवकि ॥ ॥ गवनषूमनूष्यनः कडवस्तुनं गियाः कडवस्तुननकृदः हृत्वं विकननकिनाधकमृत्तु
 निडाः कडवस्तुनं गीवडा नापनानाधकस्वप्राकनखनिवथस्रूषू नानका मृत्तुयुः २४ ॥ यथापदहायः

मीसा २

कारिः जाय कं मृत् वचनं कत्व कर्म न जी मृत् मृत् धर्म न जी यमं ॥ १ ॥ गत्य धान सा गुन या उप दक्ष नः
 यकिः शनं अर्थ मृत् वचन याय श ना कत्व कर्म या दान मृत् ऊय न पजिनं रुनां धर्म कर्म या दानं मृत् ऊय
 न पजिनं कृ कृ धर्म कर्म धान सा पक्व न का प्र खंगि ना य रुमा रु का पाथ न ड ग रु पू जा न ड ग रु दान भा किक
 म् हाम या य क था ग रु पू जा ना का दि क म् या दान मृत् ऊय न पजि ज श ना ॥ ॥ ॐ ॥ अप ने क थं यि द्याः
 मिः म् रु व ना क न न व क पू न कं या ग म् ध य द रु म् शु लं ना ना नि मि रु सं प्रा फ म् सा स दि रु नि ॥ ॥ आव रु
 न् च मे व ना व ध न मृत् ऊय न प या क ह्ना रु रु य न व क पू न क था ग या दा व जा प ल कं १००००० या य ध नं लि स्वा

स पृथ्वी या व ध न मृत् द दाली म् शा दं व नि ड श ना ॥ १ ॥ मृत् काल रु सं प्रा फ म् क्वा नि या ग म् रु
 म् न व द्वा न ग र्क ना ठि पू न कं न रु पू न य रु क्क कं न कं रु य द्वा न द्वा नं न ध रु म् ध नं न व कं न न व य दि म्
 म्पृ ष्ठा क ष्ठा क मा न रु ॥ वि रु न रु व नं का र्थ म न्य था या न गा मि ना ॥ ॥ अथ वा मृत् वचन म या य रुः
 ना ऊ म्वा य म य ना जी क व रु ड श ना ध कं मृत् स इ वि य रु व पू म् नं ग व न स ना ग इ वि रु ड न दा स नं स्वा स
 आ दि पं र्श ना न रु ख ज व न दा स थ व न स ड ल्कां कि या ग धा य क्क धा न सा या न ना न क या न ग थ धा न सा न व
 द्वा न द ज ष ना न स थ न ड द्वा न या ना डी ड वा व चा ग थ ना ठि द्वा ल क य रु ना थ द्वा नि कि या ड क्क क या ग न

कारुवमिनासानाः कर्ष्यं किन्नरं तथा ॥ १ ॥ डरुममधमः कनिष्ठरुदनः किन्नकायधकः ॥ ३ ॥
 गवानज्जहादयकायः ॥ ४ ॥ वक्रपाणिधकः कदा ॥ ५ ॥ गवमनूयायाः प्राधवायः नारिमलुलनडानसाः स्वग
 जानिद ॥ ६ ॥ गत्यधनसाः प्राधजनिवः विदूययादाजपानपिहावनिव ॥ ७ ॥ हनं व ॥ ८ ॥ मलुनपिहाजनिसाः म
 लमाकुरुलनार्कः क्रासनजनसाः यक्रुयवेः कसपाकनजनसाः किन्नरुयडा ॥ ९ ॥ ॥ चक्रुमदिगकद
 वीः नननाशरुविद्यानि ॥ वक्रुद्वानस्यप्रमार्कः मर्षनप्रिथकस्तथा ॥ १० ॥ अयानननवर्कयाकिः माकनागुमिनन्य
 था ॥ ११ ॥ मिखानप्राधपिहावनसाः नननाशरुदवीरुनरुयवा ॥ १२ ॥ मलुनप्राधवनसाः प्रकुरुमरुयडा ॥

अत्र नृपक्रियाः ॥

मर्षद्वाननवनसाः प्रिथकगकिरुयवा ॥ अयानमार्गपानजनसाः ननकगकिरुयवा ॥ १ ॥
 डल्फानिकालसंयार्कः सकालदवपाकन ॥ वनापाकनमार्गः ॥ ननकयर्थकननः कसमान्मृखेचिकानिह
 यक्रुविचक्रुषा ॥ २ ॥ गवनेषमनूयानदवनायारावनासयाकसाः अवस्यथजवनथासमदूः ननकः
 पर्यनं वनिशवा ॥ ३ ॥ कस्मात्काजनना ॥ ४ ॥ थकयाकनमृखेयाचिकसायः ॥ ५ ॥ डल्फानिक
 यागयायमानः ॥ ६ ॥ गुलिकर्मयादानः ॥ ७ ॥ अवस्यनं मुरुगकिडानीवशना ॥ ८ ॥ किमृखनिर्नयडल्फा
 किथागयकल ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ कनाअनरुनक्रियामाह ॥ ११ ॥ अथसिक्कियासम्यक्कुरुवविः

धिनायुदि संसा नार्हवमग्नानां निवृत्त्यर्थकदहिना ॥ ॥ थनलिअरुकि क्रियाविधिज्ञायरुला ॥
 विधिपूर्वकन कृपया गन धनसा संसा नअधिसमस्तु मनूषा लाकया मा कृडाक्षया रुनिमिरुिन रुलाध
 ॥ यथा कर्म कसूच सुवीव न विहा धनः कार्यो सर्वसत्त्वो नाच क्रिया हीन विहा षट् ॥
 स्वयं मूलि हृदि कि ना कथां गनियसि नो कामू हृदि की नी नो का ड हि हृदि नो ना नां ॥ ॥ ग्वनषमः
 ककसूच संज्ञा दाडा कया दः समस्त प्रका न हं हा धनया यरु ना समस्त सत्वपानि स विहा षन क्रिया हीने य
 निः निवो न कर्म या यरु ना ॥ ॥ रुचं ग्वनषू लाकया थमथ थमनः समूद पा नं ग या य म या रुः ना म न ड

८

३१ थ

धनया कृपया ऊ न थ थमनं समूद पा नं ग या य रु म या रु क ना म या रु व थ रु न मृ क या रु क र्मा या य म
 न ॥ ॥ थ या क्रिया विधि ग थ धन साः ग्वनषमनूषा थ शर कर्म या व सा न म रु रु यं रु रु नां ॥ थ व न
 संखय म न डः सुनां मृ क क थ रु म र्म रु न ग थि स रु पां गु नू ड पा ध्मा नः समस्त या दा व थ स नेः थ व रु हः
 जी न न का क व च या य या रुः रु त्व हा धन या यः ग थ थ प रि या कि न धा न सा र्थ वा य चा न पू जा क न न नाः
 न ना च र्कः व लि पा रु १ थ प नः म रु स म य धा ना म रु सां सा दि द य र्कः गु नू म रु ल द गु लि द व पू जाः व लि वि
 य थ व ह नी न या रु न का वि धि मा न क या य रु नां ॥ ॥ थ न लि खान रु नः रु क या य रु मा प नः आ हि र्वा

दः समयक काय ॥ ॥ थनलि मृक कया था न स अ न्य रु ना थन सो व सं थ दं क य थय जि य का व दू र्ग
 कि य नि ह्य धन म ह्यु ल ची यः म रु क सा यो ना स न अ मू द ल य म चा य रु ना थन था प ना कृ ण म् व धा चा क
 ग व रु क म रु व क पा १ रु रु क ह्यु या कः खे ज द ह्यु चा म ल रु दू द धा न ल ख धा न नि र्ण ना स रु अ मृ क स साः
 दिः पू ठि थो प ना या य रु पा क १ ना हा य ग व १ खा ना ग व १ नि म्ब सि न धा ना ह ना पा क मा नः म द क सा रु था क न ग
 नीः वी हि द कः ॐ काः पु काः स गं ध नीः ध न ग ह्य स मा हा का न र्मा ग्रा स ल व क ज क म् ख रु पा या द ह्य य थ
 क न कि न रु अ थ रु ना प क य क न मा न रु ग व वा १ हि न क व स न पा ड क य व न स रु ग व या क क या कः थ कः

प का न न ना न ना च कः ॐ नां अ ठि थ रु अः व रु न कि या व वे ना ग का पि च का व धी रु या रु अ थ क र्म या यः
 थ रु ना न ना च कः थ रु व रु ना न ना अ रु य कि व रु न कि या अः स र्था र्थ गु नू या दा र्थ अ म्ब न चा न रु नू ड पा थ
 क्रि या न रु यं च ग व ह्य ध न का य वि य ध न का व थ न पि ह्यु थ यि क न स म रु या क क ॥ थं लि मृ क रु क रु च क
 गा न य स रु य का अ क य थ लि द रु लि या यः स न सा दू र्ग कि य नि ह्य ध न रु ण न्या स ग ह्य सः ग व या सः स ह्यु ल पूः
 आ वि धि थं स रु नि ह्य या व रु ना ॥ ॥ थं लि रु अ क स अग्नि क ह्यु ण य रु ल रु या रु रु यः अग्नि रु यं प्र थ
 मा रु कि रु ना रु कि द व ना रु कि ॥ मृ क क या र्वा न ड ना अ क या अ ह्यो ल स व रु न थि यो म रु ॥ ॐ वं रु कालाः

मद्यथागडं ह्यधनं रविह्यधनं रसर्वपाय ह्यधनं शुद्धविभुद्धसर्वकर्माववहविह्यधनं स्वाहा ॥
 गमिह्यधनं मनुष्य ॥ गडं नत्न रमहा नत्न नत्न सक्त व नत्न नत्न नत्न विकार गमिनि नत्न माला विह्य
 धनि स्वाहा ॥ गमार्गस्वधनं मनुष्य ॥ गडं यश्च रमहा यश्च यश्च सक्त व यश्च यश्च यार्थकी नत्न स्वाहा ॥
 थं लिमृक्त कथा कस्वानवा य गडं मृक्त काय स्वाहा गडं समय सत्त्व नूपाय स्वाहा गडं सर्वपाय विह्यधनं वक्तृयुष्य
 प्रकिं ह्य स्वाहा ॥ गथन पाय अक्त नत्न हल गम समय सत्त्व नूपाय स्वाहा गडं अक्त खल या हा व काया धिष्ठा
 नयाय मनुष्य वक्तृ गन्या हा ॥ गडं किं वक्तृ गडं ह्य कर्मा खः द्या हा गः किं कर्मा खः ललाटा हः हृदय ॥ हं

[illegible]

हा ॥ ॐ सर्वपायां ऊह स्वाहा ॥ ॐ सर्वह्मा कटमा द्या द नमः स्वाहा ॥ ॐ गन्धर्वहस्ति नंदं गंडं सूत्रं गमं द्रुं ॥ ॐ गगनगंजा
द्रुं गंडं हानकं रुद्रं गंडं जू मृग प्रहा द्रुं ॥ ॐ चंद्रप्रहा द्रुं गंडं रुद्रपा ला द्रुं गंडं कालिनी प्रहा द्रुं ॥ ॐ वज्रगर्हा द्रुं ॥ ॐ
जूरु यमकि द्रुं गंडं प्रहिरानकटा द्रुं गंडं समन रुद्रा द्रुं गंडं वज्रप्रथा द्रुं गंडं वज्रधूय प्रो गंडं वज्रां वलाकि नंदीं ॥ ॐ
वज्रगन्धर्वजूरु ॥ ॐ वज्रां कूहा रुद्रा ॥ ॐ वज्रपा हा जी ॥ ॐ वज्ररुद्र वं ॥ ॐ वज्रां वं हा हा ॥ ॥ पं लां यं रुद्रि ॥
विष्णु नमः सर्वसंकल्प लावा लाव विवर्जि मं ॥ ॐ कसिंह नमस्कृत्वा शुद्धप्रकिर्ति निर्मलं ॥ ॥ ध्वलिपक्षः
रिषे कविमादिदिः नृविन न निचक यस्मा यचा न पूजा या यो य चो कृहा रा ग्य या चक रा थन पा प्र ॥ ॥

[illegible]

भाकपूयदगुलिवलिवियगुनूपजास्वानननः कमापन्नआदिवादमसुलसंहालत्रकारिषकवल्लिष्ठा
 यग वमृककयाधूमोगानीष्टयनासिचकर्थलिमृककसाजनपदकापिकीकियापिचकलठनिठुजः
 कायकलठाठठयिलकावियाधनलिनिकुमजायायायानकठःअनपाकृष्टलंखधानदूधधनहायक
 थलिवाहोनकःकाहालआदिवाजनःखरुदधुवनकःकलकनकःकृधनथयकगुनूरुलाउपनित्यनः
 मार्जहाधनीपठपथलिकुगयाठागुलिमिपूरवपनाथलिमृककजायाथलिभभनसःकर्मयायग ॥
 थलिजल्लेखानथलसखनयायगकापायाथल्लेखपनायायगथलिक्रियायायगएवना ॥

उंसरावधुवासर्वधर्मानांस्वराष्टुद्धाहंआत्मानशीदुर्नमिपनिष्ठाधनमसुलंरावयगाधूपचापचा
 नपजायाथनलिमृककयाहीनसजवखवठकासंयचकमडाकनाआकषभादिपूजागडमूनरमहामून
 स्वाहा॥थानरपकिजयानंथलिंकयाग्नियारिनचाठगुलिहिनसवाठजवखवलिकसंथलिहषा
 रुकिथलिमृककयाजठसखरुखवसदधुथलिमसुलदवगाउपनयसंहानपचविंहाकिमत्वहनसः
 तःआकाशभाथापनथलिःलडद्याननयायपनिवापनिहानकृष्टारुजयायग ॥थनलियिषुथः
 यकपिंमुग्वल१विकटग्व१थलिःलंखपाधनजाठाजपालखपानपुदकिष्ठाठवलंखगानकमकुग ॥

[illegible]

लिरुस्मादादनमनु॥ ००॥ काप्रकाशं सर्वपापदहनवजायकं हृद् ॥ पंचायचानपूजा ॥ शुक्रयायकृमापनवि
 हर्जनम् ॥ ॥ अथलिरुस्मादाय कचरुद्र अलपोसधने नलिरुद्र खलिसवयक ॥ अलपुद्र कचकीर्थः
 सद्यः मङ्गलानलिनार्पयकः ॥ अथ दत्तात्रेय नमः ॥ अलनगंगानमः ॥ अलनगंगानमः ॥ अलनगंगानमः ॥
 अनाथलिरुस्मादाय वेचरुद्र अनाथ कडजीनयो अखादवगय इद्रधनहायकं नाथ अनाथ ॥ ००॥ लिरुस्माकि
 याविधिः ॥ ० ॥ ॥ श्रीकृष्णनिरुस्मादाय विधानार्थः ॥ दक्षिणमुख्यकं अनाथ अथ अलिरुस्मादाय विधिः ॥ ॥
 नकस अथार्थनिरुस्मादाय दूर्गेकिये निष्पन्नमस्तु लक्ष्मी ॥ किं १ लचकिलटि १२ अहचकिम् १५ लं अह ॥

यच्च यंच न ल क स्यं म लु ल स प न कृ षा अस्ति ग व ल पा कृ षा म व षा य न या स्यं स र्था र्थ गु ल म लु ल य क
 ग व सिं धू न म लु ल कि न न सु कि षा क क न वि स र्ज न स मा धि कृ षा य जा द ड य जा म लु ल य जा वि धि र्थ ॥
 र्थ लि अस्ति ना न ल ॥ ॐ का य का ला य दाम ना य अ क र द्वा र्ता र्थ म क ॥ ॥ अं दि वं ग क अ म ना म ध्या
 य स र्व पा य द न २ व क र्द र्द ॥ ॥ की र्थ या ल र व य क स म ना दि लो न ल अ ह य म य क व ल दृ स्ति नू चि क क य
 डा का य न ल पा या डा य क स य चा व य जा म क ॥ ॥ अ म न २ म दाम लो ला ॥ ॥ य क अस्ति लो ध न र लो ॥ ॥
 ध न लि दि वं ग क वि य या क जा कि ष्व वा ३ क न ल जा थ र्थ क ना स ३ क स्य दि वं ग क या क वि य र लो ॥ ॥

र्थ लि गु नू य जा द कृ षा दि वं ग क वि ष र्ज न ॥ ॥ र्थ लि दि वं ग क अस्ति षि ना ग व ल य ष म षा न स क य क ल षा य
 क मा य न अस्ति ष क आ षि ष व लि ष्ठा य ग ष च क ॥ ॐ कि स्र नि कृ क्रि या वि धि र्थ ना ॥ ० ॥ ध न लि षा नि कृ क्रि
 या वि षा न या य वि धि क्रा पा या र्थ र्थ ना दि वं ग क या क जा कि षा वा क न जा थ र्थ क ना क स्य वि य र लो ॥ ॐ
 कि षा कृ क्रि या वि धि र्थ ना ॥ ० ॥ ध न लि कृ स कृ क्रि या वि धि क्रा पा या र्थ र्थ ना य न क क र्द न क स कृ षा कृ
 क्र वि य या क कृ स कृ ल य मा ष न क ना क द य क वि य र लो ॥ ॥ र्थ लि द षा पि षु थ ल अ नू य थ वि धि र्थ पि षु
 थ य र लो र्थ लि दू ष व न क थ न क य ना ष ल र व कृ स क या डा स र्था र्थ ॐ रु द व ना गु नू पा दा र्थ या य ॥ र्थ लि षु डा

[illegible]

याय दवगा द्रुकि पिष्टु द्रुकि विरय ॥ ॥ थनलिगमि विवाहा लयाय स्वस्तिक चाया वस्व न ऊव कृकासः
 वक्र चाय स्वव कृकास स्वस्तिक चाय ॥ थनलि स्वस्तिक य निना ऊ नलो हाग्निल का सखनं त्वय पूजा याय ऊ द्रुका
 चकय साया कय छद्या चकः दक ह्य निमला विरय लि विवा स पूजा थना वन क गा ग्रहा न क थन ऊ द्रुकि वि
 य ॥ थलिय पिपा कि पूजा न कि विगा य माल क चाक पूजा स्वान क न गुन रुय निम वस्तु दान दक ह्य विरय ॥ क
 माय न साया क क ह्य रिष क थलि पिष्टु विष्ट क न या च का ज वाय थलि पिष्टु क न क पाखा का श क या ड लं स्वः
 आना स्व चाक ड य क हाक नूय थलि पिष्टु या द व सां निम क य पि न क रु क पिष्टु चूय क ल क य पिष्टु चूय क धन

काशलिहारायाडा नलकनयावसायाक्रियनसलंखनयावपिहथवमयासाउसंहायःथनधूनकाशसांनिः
 मलिकशायःपिहथडाकस्वमिकसंनयावःमहलथिलकस्वानननविसर्जनयाचकःनिलाऊनलाहागिन
 कावमुनयाडासगनंनयावःनमियकसगनवियःसिहंययवऊनकाथनपिहथवमनहामन्यगाइयःवी
 हिइयःहोव्याकृतिवियःशुवापार्गवननकिचकापूरुहकृतियायस्वानननआसिखसगनअरिषकः॥
 थंलिषसिहःकचिअनयानकयकसकनहाडाअचैयदडाअलकचैयइथनरुनाथचैयकमिहनदनकसि
 धयकाशप्रकिहायाडाइहकमगाथापउयःपखसयवानपूजायादनाथथलिगलचक्रयायरुला॥

थयालिदिवंगनवियमर्जाकथंरुला॥थनदूषवनककूयायनिमानकिरुला॥ ० ॥थनलिसुदयामाथ
 नलायाडानिमूहायाउथंःकसकिमसीयविपागिनःकसकउयमाननजाथयःककसकागाननाचकःआग
 लकासंःकसकाकनादससंःपिवायासथदडाकाषजानुककनसयखसिसरुनाथनलिकसनिमवियरुना
 थंलिवरुनिसदिवांगनवियमर्जाकथंरुला॥ ॥अचैयःजिसमाधिजावरुधूनकावःकमनासमकठपूजा
 पर्यनधूनकाशदिवंगनवियरुनागुपूजादकिहाआधिषथनदिवंगनथायसगनयकलसयरुनासमः
 याचक्रगलचक्रविधिथंरुला॥ ॥रुमिसफहकियाविधि॥ ॥थनलिवनककूयायारवाकसरुवाच

सिचकः लेखकाय न स क या य न्यः था य स थ न का वः वं ख का प न स ध ड कि न चियः गा व न ह पा य कः मा उ हू य कः
 ग म चा न नि षं थ पा च क ग थ नं लि द ह पि षु थ य कः पि षु थ य ध न का डः ग म रि स क ल्यः क ल न व य कः मा उ हू
 य कः थं लिः कु ल क र्म नू सि का य कः ग म व र वा यः अ व हा स नः गं ग म मा ह न मा द हू यः व र्म नि यः प य र ग व का यः
 थं लि पि षु थ व र्मः इ वी वि या व र्मः प्या न कः पि षु थ व र्म नः इ वी लः क य ना स न र्म ह या डः गु नू या डः अ न क या व
 सूर्या र्घ गु नू या दा र्घः थ ग ध न दा वः थिय द माः थं लिः कु ड य श नाः क स न सा य मा नः न ह म य ध न का डः लाः
 हा ग्नि न काः ना हा न स थियः कि गु डि स्तान वा ह न र्म यः ध लि म ला ना हा न थिय क सि हू नू य वा हो न र्म श नाः

थं लि इ इ धा नः पा न धा न हा य कः थ ड क हू य कः कि गु डि स्तान क कि न क सि क था य स ड हा ड न श ला ॥ ॥
 थ लि इ इ धा नः पा न धा नः क या गुः अ ल पाः पि र वा न व स ड क क क क यः थ लि स ग व ध नि क य य कः पि षु थ या
 या द कि षा का यः स ग व ध लि चि र्प थियः गु नू प्र स र्व श नाः ॥ ॥ कि द ह म हू क्रि या वि धि श नाः ॥ ॥
 थं लि उ का द ह पि द थ य कः पा न नं श ला ॥ म त्प मा नू स दि क नं मा ल ॥ वि धि र्थः न क र्म चं ल य जाः थ लिः
 पू रु नि का पि षु ग व १ हा न दा न वि यः मा न कः पि षु र्वा सि र्म च य कः थ ने लि नि हा ल चि रा य इ व न स जा पाः
 ले ख य वि धि र्थः जा कि ११ क ला न मि चा सः जा कि व डि थ नः वि क षुः स क षुः म नू क षुः स ल थं लः स्वा

हानः शसिकथिसखायशुभा॥ कसनाकिदशुयशुभा॥ थनकादशक्रियाविधि॥ ० ॥ थलिसनिकुई
 ग्वनखानकाय॥ पिथुथडासः मालकूयकधूनकावः कलभार्वनविधिथं॥ नानाचकाडागुनमलुलदगु
 लिजायेकैषपूजागलसमाहाकालेपूजा॥ धूनेकावनिष्ठादहनयसकलयार्ग॥ ग्वलजगनकायदेगुम
 सकैः सूर्यादिसकनरुं आगनकायधूनेकावः ग्वसिपनिस्तुग्वलवियचिस्वावियकृत्तिकलियाविंय॥
 पिथुथयालिथनसकसं धूमांगनिष्ठाया॥ थलिगुनयूजादक्रिष्ठाः अरिषकविसर्जनवलिक्षाय॥ ॥
 रूकिग्वलखानविधि॥ ० ॥ थलिमिसनिदूननकाः नौयकूदूननकाः मिपूजाः गृहधुधयकूयायवि

१९

धिथं गालनाचकाडाक्रियालकूगुनमलुलं ववलिक्षायचिसमाधिः कृष्णपूजायकूयायकाययाहमि
 वायप्रथमाकृतिः कूनाकृतिः दवकाकृतिपूष्पकृतिः खानननगुनयूजादकृष्ठाः कृष्णारिषकअसिषसम
 यविसर्जथानवलिक्षायमालकावान॥ रूकिमिपूजाविधि॥ ० ॥ थलिप्रियकविधानकाय॥ ॥
 नकसकूथकूदूमरुं निगसिलपिथुथडासः सारिसावसः लसिकाकूकः मालकूयः अलयादकः ग्वलजग
 लसदेगुलिः आर्गः चैत्यकूग्वउनिग्याग॥ थलिषाडभापिथुथयकः विधिथं चैत्यपूजागगुमसर्वधु
 वनयूजापिथुथयकशला॥ ॥ प्रथममासद्वितीयः रुकियः चतुर्थः पक्षमः षष्ठमः सप्तमः अष्ट

म० नवम० दसम० नकादस० द्वादशमासपिष्टुसुधा॥ ॥ थलिसलमासपिष्टुः पक्रमसपिष्टुः सैक
 किपिष्टुः अयनेयक्रमपिष्टुः ॥ थलिविकटपिष्टुः ॥ मर्जकथं धूनकाडाः स्वाभननविमर्जनपिष्टुचयकलः
 श्रुयः कुलिहाउनः पिष्टुथशमः निघाननदधानं ॥ रुतसाधोदसिः सरुतसा लोकिकपिष्टुथयइ ॥ ॐः
 किनिगपिष्टुविधिः ॥ ० ॥ थयालिवसकिषूद्रुक्रियक्रमपिष्टुथय ॥ नकसयकूडपकलूतानलाचक ॥
 पक्वक्रामसुलवायः कलहानसुलेडयकवीय ॥ मूलकूडावीककलहः श्रीलक्ष्मीयक्रमनीनागद्य
 जलनानरुधाः गुरिआदिनथापनायायकला ॥ ॥ थलिआचार्यसः पिष्टुथशमः सदसासकूपक

लि२

गवानहाय ॥ थनधूनकाडाः सूर्योद्यः क्रियानमः गुनमसुलसमाधिः कूडागहसः साकाकाजः श्रीलक्ष्मीयक्रम
 यक्रमनीनागद्ययूजा ॥ अग्निस्त्रयनप्रथमाद्रुमिथनदवदरसाप्रकिष्ठासर्जकथं ॥ थलिगंविवाहाल
 यायः स्वस्तिकसंस्तेनः ह्यश्रुयनीनाऊनः लाहग्निनकाः ऊअवकासकिंलवायः रवजवकाभवकवायसिध
 नकिचकः हौरवलेखनहायः अद्गमनयः यलूनकरवायकः पक्षयचोपयूजायायः कूडालंखनहायः सग्वनः
 वियदकूडाः निसनाअवियः गममनकः सायागआद्रुमिवियः थनधूनकावः सिकथासमूलपिष्टुथयक ॥
 मर्जकथं चैरागमसः मरुतः पूरुनिकाः स्वयनियानामनपिष्टुस्वग्वउथयः मरुतकथानामनपूरुनिकापिष्टुग्व

उ१ विकट गव१ विधानार्थं यि सुथय धूनका अंगु नूपूजा पूजा बालिश कः अंगुठिविय वस्तुविय कृष्ण डयान
 कथयिः दकृष्णवियः स्नानकन ॥ थरु धूनका अः मृगकया कथया यि सुयात्र खाचान स्वत्वा कथया अः स्वयुविसः
 लीनया यः स्वस्ति वाक्नेरु ल ॥ थनलि बालका का अदरसाः ब्राह्मनी कृष्ण अः य ॥ ॥ थलियि सुकनका अः
 पोषा का सदिन केः स्वचा कर्ल खधा जा थय कः यि सुनंगु नूनं थलियि सुया कृष्ण साक्षा पा कृष्ण या अ यि सुचा य क
 ल कृष्ण यः यि सुथ अ मृमा कः सा या क्रिय नै थ ना अ भी ल स हा यः सा लिरु कृष्ण यः जल नान स कृष्ण व क ॥ ॥
 थलि म सु ल थिल कः स्नान कन्यः विसर्जन नी जा अ न ला हा गि न काः वस्तु द कृष्ण सः स ग्वन वियः स रं ल य वरु न का ॥

लि

थलि ऊ ऊ माननः कामसिका दय कः ब्रीहि दूयः य क सूरु का कन के सि रया धि वा स न या य ॥ थलि प र्ण या य ॥
 स्नान कनः गु नूपूजा दकृष्णः कृष्ण रिष केः आशीषः स ग्वं न य कः कृष्ण ला यः आचा य प्र स ख न थ का नि ना कृष्ण
 मूख न रू ला ॥ थलि कृष्ण ला यः ला या कृष्ण वि स र्जन ॥ ॥ थलियं च न का म सु ल क या थ सः कामा नी पूजा म र्जा
 कथं क्रिया धूनका अ व नूजा कृष्ण कामा या ला ख स म य ग ल व क ॥ थलि वरु नी म र्जा कथं दि वं न क विय रु न
 ॥ कृष्ण क्रिय कं यि सु विधि ॥ ॥ स कि कृष्ण सौ स न यि सु थ य ॥ ॥ यि सु गव३ विकट गव१ कृष्ण क्रिया क
 र्म विधानार्थं रु या ॥ थरु स मान यि सु रु ना ॥ था ग २ सा रु ॥ स स मा स म स र्ग व र्ण गु नू धि य के ४ मि थ या

२२.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ का किला या यमा नः अग्निस्तुक्ता न या यमा नः गार्ग्य दक्षया स शशा न रु ला ॥ ० ॥ एव जिं का य न य नं, रु का य मी
 य नं स किं पि सु दा ना द ना दी नां का न य द स्मि स्व र्य ॥ ॥ ग व न षू वा न ष प्र व र्ज गु रु न या य धू न का व क्षी ० ॥
 आ ॥ थ म्म या रु रु ल दान पि सु दा न वि व र्जि र्ग ॥ ॥ ग व न षू वा न ष प्र व र्ज गु रु न या य रू या डा चा नि आ प्र मा न न
 प्र व र्ज गु रु न म यो य व थ म्म वा ल ष मि यि व रु ल दान रु क या य पि सु दा न यो य म म्माल ॥ ॥ ग व न षू जि म
 न द न दा व रु ल दान आ दिं पि सु दा न या य माल ॥ ॥ नि र्वा णि का स श्रु ष्ठा र्य व जा च र्य क थ व व च कः
 पि सु दा न क र्थ १ स फा रु नि वि षा ष क ॥ रु ग व थ य रु ला ॥ ० ॥ आ म हा न क रि रु ष्ठा च का का र्य वि धि य न

जि

पि सु दा न ॥

चे न क था ष्ठा क्ता ना च पृ थ क र्म पृ थ क्ति या १ ॥ ॥ आ म हा ल क या रि रु या क र्म ड थ रू ला १ ड या ष क या
 चे ल क या व्या ग ल २ क र्म क्ति या रु ला १ ० ० ॥ क का पि सु दा न मा रु ॥ प्र थ म दि नि य रु
 कि य षू च क क थ प्र दा य य रु क थ वे रि च रु थ क थ य र्म म्म नि या थ य रु ॥ रु व स क वि ष्व ष्ठा र्य स र्व द र्म नि
 रु द न वा धी ग स फ धा रु च जा थु र्ग य र्म म्म रु नि ॥ ॥ पि सु थ य या क य नि मा न ग थ धा न सा न क र्म रु
 रु रु ग व उ नि रु रु ग व उ रु रु ग व य रु रु ग व उ रु रु ग व उ ॥ थ रु पि सु थ या या पू न्य स सा न या स फ वा धि स
 ली न रु ना ॥ ॥ ष रु म क र्म थ पि सु स फ म द य पि सु र्म स ल न जा न मा ध म्म पू न्या को र्य प्र व ष य रु ॥ ॥

लक्ष्मिचिरुवर्णयस्त्रिविवाहधर्मसंन्यासककल्लुचि॥ ॥ नानायाजिमूककू११ वेत्ययाजिमनिकू१२ सु
 दयानियकूकू२१ थननहुविहला॥ थनयादाप्रमानरुना॥ थनजाजिमययाजिनाथनहुवि॥ यरु कर्मस
 विवाहाजसंन्यासधर्मिकरुना॥ सुककमन्वाव॥ ० ॥ जिवकिचयितायस्य मीयनचयदिसूकधर्मलिनः
 कनलनस्य कस्य धाद्वलेयकूकू१॥ ॥ गवनधूमनूयया कायलियीडा ववूजकम्वानाधीनिडा कायसिकयाः
 लीनयिधुमन्वाले धूमया धाद्वलीनकर्मसद्वरुना॥ ० ॥ पितापितांसद्वस्थे वप्रपितांसद्वकस्य ववूद्वचधर्म
 चसंघकूकूकनलनकलोचसागकिऊननविधिनारुया सर्वेषां लीनकर्मसु॥ ॥ ववूऊजाकपोऊजा थनस्य

नेमि२

६२

पुष्पविशेषात्

पूलीस लीनयायकूयागकिधनसा वद्वधर्मसंघयाक लीनगकि समरुला कया थनप्रमाननरुला॥ ० ॥
 लीनारुनसमानय निमिरुिकगद्व नीर्थवाल ययवट धाध्वयिधुप्रधधन॥ रुकशाद्यदि कसर्वद्वयंकुत्ति
 कवर्जिनः सपूनिर्मलहुद्व सुययस समारुिक॥ ॥ लीनयोधुधूनकाज निमिरुदलसं कस नीर्थ
 स दवाल यसु सहा २ यवट दीनसं गलरुनसा पियु कर्मयायरुला॥ महाप्रधधन नयवमुक नीनवमुक
 हिगु महिगु वमुक यागध ऊयागध वमुक कडा मकन स्वयाडा सा मायी नानावकाडा कयरुला॥ ० ॥
 पूर्वकूकूकनानकव ऊवायादिनिमरुयय कालयस्त्रययादा पध्वदा चम्यस्यधयन् ॥ थापयित्वागुन

रुक्मः शुचिस्तु नवविप्राः ॥ रुक्मिणीया च नंदत्वाः शुद्धरुमिनिथा जयन् ॥ ॥ पितृकर्म या कुरु ॥
 षड् नयधूनकाऽचानः गुणगणनिमग्ननायायः पाशाचमनया दावरागु रुमीर्हरकिपूर्वकनस्त्यपना
 याय रुक्माः ॥ ॥ अथ माधुः शुद्धात्माः किंकरीयोनसुवर्गीः निजसिखसुसंस्तुष्टः क्रियानशुचिचक्र
 नः सज्जवा सो गुणैः शुद्धैः साययचेसमाहितः रुवं शुद्धं च यथा शुद्धं अकुर्यादपि नो गता ॥ ॥ शुद्धया
 यवजसः थथिस्तु गुणयायः धानसाः सहानमः रिगुआत्माः शुद्धीजयनय रुवस्तु सत्त्वा न कं मन्वा कस्तु नित्य
 रिः विहाय न संस्तु रुडास्तु क्रियासमस्तं सवशिष्टास्तु कमावक्तुः शुचिचक्र थथिस्तु गुणगणधनसाः शुद्धा

धरुमिस्तुस्त्यपनायायः थस्तु या शुद्धमस्तु अकुर्यादुल्लसयिवः पितृलोकः शुद्धयव रुजा ॥ ॥
 दृष्टात्मा ववनकनवक्राणी कलरुपीयः असेरुष्टु शुचिचक्र चवं गुणविवेकयन् ॥ निर्जासापिरुजाजाकिदा
 माननकवर्जयन् ॥ ॥ रुक्मैराथिस्तु गुणधनसाः सहानमः रिगुआत्मा रुयावचादुःवर्चस्वायेन वस्तु अयानय
 रुवस्तुः ल्याययवस्तुः असंकापिस्तु अष्टविस्तु थथिस्तु गुण शुद्धैः कर्मसमाजकमालः अर्थकटनमदयं या
 कस्तुः पितृलोक निर्जासाया दावः लुहाजनिवः रुजमानं ननकडानिडाशला ॥ ॥ आयुर्सेमनयं दानः
 शुद्धपात्रचवर्जयन् यमादादीयकयन् दत्वा किलिपकारवन् ॥ ॥ पितृकर्म यायस्तु नवस्तु कस्तु ना

मीशकायमात्रशला॥ धृक्कृष्णयजुर्गृह्यार्थिगवधानसाः कृष्णयाजुर्गसुवेनाचनः कृष्णयासधसजुमिगारुः कृ
 ष्णयाहासजुकायः थथिगुरुदनेचादवमुकः थथिगुरुकृष्णयाय॥ ० ॥ प्रवाहापूजार्कचः विदधंविष्टव
 यादिः अन्वाणवचपात्रचः यदिगार्थालेखनार्थः विदधस्त्रयदागार्थः मृगवायस्यनिरसः ॥ अमपिष्टुप्रकृः
 विरुदत्वाप्रकाशयवजुर्गृह्यार्थः कृष्णयाजुर्गसुवेनाचनः कृष्णयासधसजुमिगारुः कृष्णयाहासजुकायः
 वस॥ ॥ गवधिनार्थः कृष्णयाजुर्गसुवेनाचनः कृष्णयासधसजुमिगारुः कृष्णयाहासजुकायः
 सदाः आययिष्टुथयशलाः गार्थिगवधानसाः कृष्णयाजुर्गसुवेनाचनः कृष्णयासधसजुमिगारुः कृष्णयाहासजुकायः

कनः धर्मनमहाउरुमरुलशज॥ ० ॥ यदानजसुजासाधीः कस्यचवाधुविरुवर्गः स्वामिनः स्वानमात्रन
 धुविस्थात्सर्वकर्मसु॥ ॥ मिसाजनयाजुस्त्रयाशुनदावः अष्टुचिरुः थर्गसमिसाजनयास्त्रानमात्र
 यादानः समस्तकर्मयायकृवशनी॥ ० ॥ विहाननादिनयनः अष्टुचिरुः थर्गसमिसाजनयास्त्रानमात्र
 कृलकृन्धुजायकः अष्टुचिरुः थर्गसमिसाजनयास्त्रानमात्रयायकृवशनी॥ ० ॥ विहाननादिनयनः
 गवधिनार्थः कृष्णयाजुर्गसुवेनाचनः कृष्णयासधसजुमिगारुः कृष्णयाहासजुकायः
 वस॥ ॥ गवधिनार्थः कृष्णयाजुर्गसुवेनाचनः कृष्णयासधसजुमिगारुः कृष्णयाहासजुकायः

० कार्लिक शुक्ल माल ४ पूर्ण नाकादिनयनिःधर्मपि सुप्रदातवाः चतुर्वर्ग रूलायय ॥ कार्लिक माघ वैशाख
 भाव एव चतुर्वर्ग अस्त रं रूला संरुवक ॥ ॥ कार्लिक या शुक्ल पक्षे अस्त मने मासि भाषि सधर्मपि
 सुप्रदातः श्वक रूपि सुप्रदायाया पुन्यनः चतुर्वर्ग रूलायकः रुचंशु गड दय रुव दीन सपि सुप्रदातः गवगुली
 दीन भावसाः कार्लिक या पूर्ण मासि वैशाख शुक्ल रूनि या माघ या पूर्ण मासि भाव एव चतुर्वर्ग या यदीयः श्व
 गड दय दीन सपि सुप्रदायाया रूलाय मानयाय मजिडा अस्त रं रूला ॥ श्वक नमने याप निरुनः माहाशय वर दी
 न सपि सुप्रदायाय माव रुवा ॥ ॥ वृद्ध पा नाडिका माहा ॥ प्रमाया लक्ष्म्या क क मृत्का नाक ॥ कर्षु पक्षः

३२

[illegible]

क. व. इ. सूर्य या गर्भ सच विवाह यरु म. लु. य. संघा लु म न दी नी र्थ. न क र्था त्म क र्क सदा ॥ ॥ गव ना ना ना ति
 कृ द न म ध न ज व न का दा म म न्वा न् सं घ स थान म क क म न्वा ल ॥ ॥ य पा ना ति म र्क ना य. न नू पा ना ठ
 ना द म. स न्या स वाल क वा पि. स थ म्भे चं वि नि र्दि ष्ट क ॥ य व य व न वृ ष च वि वा हा त्म व य र्क क. ध्म धा त्म वा न
 म्भु वि ष्ट स्या त्म क र्क सदा ॥ ॥ ग म धि ना या म. शि मा ओ दि ना. का टि ज को व. अग्नि न पू दा व. मे व न रु ल दा अ.
 शि क या. स थ. ध्म च रु ना ॥ स न्या मि या. वा न क या. थ क या स थ. ध्म च न लु चि रु ना ॥ रु चं प्र व य्वा या क र्म स. वि वा
 हा व स. ना ना उ त्म व स. य र्क क र्म स. ध्म धे स. वृ ष क र्म स. थ क क र्म स. चो व ग्वा दि मे न रु व या सू च म न्वा न ॥

वृद्ध

म न द ध्म क न ध्म. ला. स थ सो च रु वा ध वा र्क थे व च स र्ग ना नां. मा ना पि ना द ध्म रु क ॥ य क रु गि नि स
 क. ध्म ल क र्क क द रि ना सू क. पि नु या मा क वि च व. लु वि स्या र्जि ना रु क ॥ ॥ गव धि ना द ध्म क न व स.
 शि क वा न ना य व. गव धि स र्ज ल या रु क स थ सो च. मा म व व या रु क कि रु ना ना ॥ रु चं क रु या का य मि क या.
 कि जा शि क या. थ व ध्म च शि क या. थ व का य शि क या. व च या कि न मि क या. थ क या दि ना ध्म लु चि रु ना ॥ ॥
 म न क र्क क र्क. थे व प्र स क व प्र स क र्क. क दा वि लु क का रु या रु. लु चि रु च रु ध्म रु ॥ म न क र्क क र्क का रु य.
 पूर्व स र्क न ध्म ध्म. मा रु न का न ध्म वि स्या रु. पृ थ क ध्म र्थ पृ थ क कि या ॥ ॥ उ क र्क शि क या. रु पो ल

सिद्धि कर्माणि न कर्माणि

नवनकः जय व्यापि मा न ह वृज या ॥ व्या ग ल २ नवनक मा नः थ न न धु चि रु ना रु ना इ ख मा ना व वा ल रु
न सिक या रु पा सिक न र्म य दू मा म व व या म व रु ग म न सा य धा न सा म्पा रु म्प न स य रु ना ॥ ० ॥ ग र्मा
दि नि रु मा य नः द न जा क पि मा य चः अ ऊ न द र्म ना स मा १ नो द का ग्नि न म स्म नः क र्मा च व न का न य रु ॥ द
न जा म मा ना ला ४ स य सो च वि धा य नः द न जा क पि मा मा ५ जि ना न न धु चि रु व रु ॥ ॥ ग व न वृ ग र्मा
न जा क रु व या द र्म न म द र्म सिक या स स्म ल या य म म्वा ल धु चि या यं म म्वा ना रु र्म वा ल क या वा व न रु ५
थ म्प वा न क र्मा य ५ ग र्मा हि द क या स य न सा च मा म व व या जि ना न न धु चि रु य ॥ ० ॥ पि मा मा ना गु न र्म

व य क र ल म्प ग रु कि क्रो न या व न क र्मा ना व ल म्प क मा दि ल रु ॥ द र्मा क न म्प क र्मा म्प क दि न वा स न
य दा रु क दि न र्मा र्मा सो च पि लु म्प मा च न रु ॥ ॥ व व मा म गु न थ म्प म्प मा क र्मा ग र्मा व न का रु न क र्मा
म या क र्मा व न का रु म्प मा न रु ला ॥ ० ॥ द र्मा क न म्प क र्मा म्प क दि न वा स न य दा रु क दि न र्मा र्मा सो
च पि लु प्र दा प य रु ॥ प्र क पि लु नि य क र्मा स च न स्तान मा च न रु स्तान म्प म्प नि ना म्प क र्मा य न धु चि रु ॥ ॥
ग र्मा न र्मा द र्मा क न म्प सिक दी न र्मा न म्प सिक र्मा ग र्मा क र्मा ल र्मा क र्मा या दि न रु द रु व धु चि रु म्प पि लु क
म प र्मा न र्मा य रु ला रु र्मा प्र क लु थ व म्प दा व म्प व न थि न सा च न स्तान या य मा न म्प क र्मा प ड वा न रु

यादवाद्यनिशुनसुनानमाहुनं जापमाहुनमुचिरुनं ॥ ८ ॥ महागुणपिकाचेव विविधिमहाकदा
 चना वर्षमकनकहीनस्नानदानार्चनादिकं षट्सासाध्यजनन्याम्यहोमोध्यकदहकं नद्यदहोहपू
 जार्नाकाहुद्विपुजायने ॥ १ ॥ गवनममाकमोकलेदिकाकर्मविवेकगुनमहागुनधायथेजः
 कुरुन्यविशमववृथनिस्तसिक्तसादकिमासुनानयायमालद्वार्चज्यादिमगडाकर्ममगडाश
 लाहर्नमामसिकयापूजापर्यंतकर्ममगडाहर्नकाचसिकयाध्यनाकाकर्ममगदशनाहर्न
 किजाकरुकायकयःक्यचक्यसिकयाःनत्याकाकर्ममगडाथकप्रसाननहसयादावहुचिकना ॥

०० किमककयानमहला ॥ ० ॥ थलिकाकक्याटकविभिमाह ॥ रिक्क्याककनयेवचहुविहमिः
 वर्षकहान्याहावक्र्याटवदहावर्षमाचनरु ॥ निरुपाषट्कुरुनेचलविम्वार्चनंपूनःस्नानदानंजः
 पध्मार्चनंचननिरुपाषट्कुरुनेचलविम्वार्चनंपूनःस्नानदानंजः
 चन ॥ १ ॥ रिक्क्याटकयादापापनीयपिद २४ नमूकुरुलं ॥ हर्नहान्यासिवास्तवाद्याटकयादापापः
 मिम १२ नमूकुरुलं ॥ सदांपाषट्कुरुनेमहाइःखनस्यंचलपूजायादानंपूनर्वाजस्नाहदानयादानंरूप
 ध्यानयादानं ०० दीयऊयलपानं संपरियाजूनूपमदनयादानंस्नानदानंसंयलऊनयादानं ॥ १ ॥

किं दानया दानं ॥ थन उपाय या दानः रि कू वा सन सन्यासिः घाटक या दाना पाप मूक शूल ॥ ॥ कपसी
 घाटकं धेव रि कू ली घाटकं कथाः वा उष्ण दैव वर्षे न क मव व न मा च नः ॥ मल ल क घाटक वेल क याः
 टक नः दक्ष वर्षे समा च न न ॥ ॥ कपसी घाटक याः रि कू नि घाटक याः जिमषु द १५ न मूक शूल अथः
 वाथ या वरि न मूक शूल रुचं ॥ मल ल क याः वेल क या थन घाटक या दाना पाप जि द १० न मूक शूल ॥
 कृषि या घाटक प्राफः दक्ष वर्षे समा च न न ॥ सफ मव न का थि न्यं तान दान थपर्व कः वृष ह क क्ष न दानं कि
 कृषि हु ध मा च न न ॥ ॥ कृषि घाटक या दाना पाप जि द १० न मूक शूल रुचं कृषि नी घाटक या दाना पाप

३३

थन या दाना या थन पाप मूक शूल ॥ ॥ वेध घाटक ध्व अरु वर्षे समा च न न ॥ वक्र घाटक वरु धेव तान
 दानं चपर्व व न ॥ वेध म्ली च व द ४ प्राफ ४ पत्व र्ध रु जि न दी य दाना दि क य था पर्व वक्र च र्थे समा च न न ॥
 वेध घाटक या दाना पाप न्या द न मूक शूल वक्र घाटक या दाना पाप तान दाना या थन रु ला ॥ रुचं वेध म्ली घाटक
 क या दाना पाप मू द न मूक शूल थ या उ पा य दान या य वक्र च र्थे धन न प मा न ॥ ॥ सुद घाटक धेव
 षट् वर्षे समा च न न ॥ तान दानं ऊ प ध्यानं कृष्ण षट् म व च ॥ ॥ सुद घाटक या दाना पाप मू द न मूक शूल
 वक्र उ पा य या य मा न कृष्ण या थन रुचं सुद म्ली घाटक या दाना पाप दान मूक शूल ॥ ॥ वृषि च रु व ध्व दिः

वन्धनपात्राजिका ॥ ० ॥ गमवन्धनदक्षदवचनः पूजिकद्विषयः गमदानः रुमिदानं चः पाषटवविः
 ह्यषट्गमरुकिगमहर्गणकः पुपविन्वायनादिकं ॥ गमविष्ठाप्राप्तनं निर्यं वृत्तं कुरुं समावजगु ॥
 गमघाटकयादायापजिमनिद १२ नमूक शर्नः कर्मयाय गथधनसाः गमथरुमिसुगमदानयायमानरु
 मियानयायमानः विष्ठापलधायटवृत्तयादानसायाकुरुकियायः ॥ १ ॥ कुरुदियानः वृत्तपूजायायः गमम
 यप्राप्तनयायः थनककनचनययमूकशर्नः ॥ ॥ दिगुर्गगहिनीघाटेः दधुघाटानेनाधनशाश्रुष्व
 घाटदक्षदक्षगजघाटेनथाष्टकः षनघाटकेवषष्टर्षः दिगुर्गगहिनीवधः ॥ ॥ दधुघाटकयादा

नः थर्थाः रुर्नश्रुष्वघाटकयादायापः जिदनमूकशर्नः किस्मिन्नादायायापः चादनमूकशर्नः ॥ गमधस्याना
 यायः षदनमूकशर्नः थनककनयागर्हर्दूकघाटकयादायापः थनककनयादूर्गकिपायशर्नः ॥ गमहिनी
 दधुनद्यानहायादायाः ॥ १ ॥ नमूकशर्नः यादायागुलिर्किं कूटिमयिजः गुलिर्किलसकूतिनयनिजः गुलि
 र्किंमिर्नयूयः थनककनयावकिपायनकदः कसकूर्नलिः सिनसायानमकदशर्नः ॥
 अषष्ठादिप्रदानेनः स्वकूयायदिवाजः ॥ नदाधनकनमनर्गः जीवघाटनेनयर्नः ॥ गमनयूयध्विः आदी
 नप्रयागयानः थयादयायमकस्यसिथिजथयादाधमदू ॥ ॥ याजननाधनयूकः जाजनयनजयिवाः

कुरुवमनर्हंग कुरुः प्राप्तिगुर्विणीवर्धनं आला चया दभर्कं च वन्धनं वाधयकथा याऊन पादहीन कवर्गं च
 पिसमाचनक ॥ कामक कुरुयायस्य अर्धकर्म प्रस्यन ॥ ॥ गमनं याऊन पादस्य अर्धकर्म प्रस्यन ॥ कुरुवावकथा
 कुरुजागजायनेयाअसिक्तसा आह्वयेका काया यवासक्ति वा यायनकद थर्थं यवासक्ति वा कर्म यायसा लथः
 कनसू कुरुला ॥ ॥ पाषाणराऊनलेह द्यष्टारुनेह रुषह ॥ कलाय कर्द नम एने विद्युतास निद्या टने ॥
 पनिकस्त्रायदरु कं गुरुदाद वनपिवा यकुरु विपरिच यादन कंसमाचनक ॥ ॥ नसा न केन न यास्य
 याजन लेह न कुरुया कसां घृष्टन कायाय कर्ध लषसजलने पूष लिसेद ननं येव गुरुस दाहो कर्ध न वनाकन

सजअल थकसं विहीन कुरुयावसिक्तसा आह्वयेका काया यवासक्ति वा यायदू यवासक्ति वा कर्म यायसा न ॥ ॥
 पिरुवन्धवु कुरुवन्धु ल्यया नाकि कारुवक ॥ मारुद्याटं लवन्धु ल्यं यमादा यदि वारुवक ॥ कुरुन काम
 रागला स्वकुरुया च कुरुयून ॥ ॥ कुरुन मेयवेक च वेक नपि मिवा सुवि सुवि ॥ ॥ पिकावन्धयादायाय
 वकुरुवन्धने कुरुला मासस्यादायाय सास्यादायायाय कुरुल्य प्रमादनं काधनं अहाननं थव ॥ ॥ कुरुन यादायाय
 ॥ कुरुना कर्ध पनना कर्ध माकर्म दू महावजयाय कर्ध ॥ ॥ यदि पूवध ॥ याफ ॥ वकुरुद्याटसं रुवक ॥
 पनियेव विचो नन यकुरुयार्थयकयून ॥ कुरुगुरुहि न स्थ कुरुला रुमिस्त्री हन हापिच ॥ ॥ गमनं पूवध्याः

टकयादापायः वक्रकुलः सामः वव्याकः अयनाधया दाजप्रार्थनाया दानैयकनैः दावदुःखशला ॥ धनः
 दावदुःखकः गुरुः रुमिदानः सुवर्षदिगीदानः आदिशा दाजभावकशला ॥ ॥ नाठिकाकृष्ण
 मयकः सननैयविधिंतिगः आत्माथयिरुमात्रुथः गुनवधः कथेवचः यमृदिधः कृत्वा नैः कभवाहृद्याः
 टकधः ॥ ॥ सामः ववः गुनः ४४ खवियः पियावियः सनकैरयः द्याटकभाचकः धरुखअहृद्याटकधः
 यः धनपाययाः पाननाननानमकृशन ॥ ॥ दाननखधुयत्तायः प्रजागलकसाहृवः प्रिणगसमाव
 जनः गत्मात्तायविम्वयन ॥ ॥ धननसन्धनः दानयायखधुलेयः वाकृवाः प्रजायाकृवाः खवागुलिथः

२५
 सायनाजिका

मंभावकशना ॥ धनयकानलभावकशला ॥ ॥ वधसर्वप्रजागीनीः कृष्णमदमावचरुः प्रिवाधिकव
 कः अयत्नानपायदया दानैमकृशले ॥ ॥ वृत्तिर्वधधिकानशा ॥ ॥ खवनायसगदुकिः यत्ता
 दीशलाष्टयातानिलायनाधनलारुनः सः ७ वसुधाटकः ॥ सार्थवक्रवधकुलीः सगवधः वधसर्मा
 सिहकृषिवधः दृष्टिसाद्याटकसलूक ॥ ॥ गुलिदिनाः सगलयंकिः दाज्जादिनैः जलकुदकैः नि
 नायनाधनलारुनः द्याटकयादापायः सुदद्याटकअगुलीशुल ॥ ॥ रुनाः सयद्याटकयादापायः वक्रद्याटः
 कअगुलशर्न ॥ चनाद्याटकयादापायः वधद्याटकअगुलीशुल ॥ ॥ रुनाः सिद्याटकयादापायः नाजास्यादापाय

अहुल्यं शूलं ॥ धर्मया दगुलिः क्राया क्रावली नमस्कि शूनं ॥ ॥ शुक्रसाजका कश्चि नमय नाथा कखचः
 नाना रुकपो नाजिका रुया प्रि नागुल व हुच्छि कि ॥ चटका काला किला हं गगु यदा ना रुचिया त्यं ॥ स्नान दानो
 पमने च दिनमर्क च हुच्छि कि ॥ ॥ गमि कि ना रुदू कुमी चा स नान मगल का ला खा क सखा धर्म आदि न
 मगल र्पां कि गम म नू य न द्या ट क या दा पा य प्रि नागुल नमस्कि शूलं ॥ रुच च र्प व लघु नि का य क किल उमल
 आदि ला रु न द्या ट क या दा पा य स्नान दान उपा स या दा न दी न कि थु कि ने मरु क शूनं ॥ ॥ वमा क छि दि रु
 गान रु सा न च क वाला क रु ला ध्र या न ॥ मग म गे द्या रु स्य व न वा ने ना म्ख का म पि मां जा ना त्म क ना रु य

नि रुका सी ना क थे व वा मा रु न वि नि या रु च प्रि नागुल वि हु ध्र कि ॥ वा क्क हा र्या दि द दान आर्य संधय ४ श ऊ
 य रु ॥ म न रु ल्य य न नु य न सा मा रु रु ल्य य रु ॥ ॥ धा रु न कि रु ल रु स च का आदि न रु ल रु रु य नि रु नां
 य ला का न सा हा ल कि सि मा क ल म सा य र्थ र्क थ न रु रु य नि अ रु हा ने द्या ट क या दा पा य प्रि नागुल नमस्कि शूलं ॥
 वा क्क हा र्या रु दान वि रु आ चा र्या दि स र्थ रु रु न या रु कान म रु रु य रु य या दान व च न ना रु या दान थ रु न प्रि
 नागुल नमस्कि शूलं ॥ ॥ कि ही सा या ना जिका ॥ ० ॥ क थे व वा क्क हा य स्मि न रु प्रि या षु स मा च न रु ॥
 अ रु य रु दी दा रु या रु रु दा स य कि ना रु रु ॥ क थे व रु प्रि या वे ध स मा च न रु य रु य रु दी ये दा रु या रु रु व रु रु य कि

रुकनया कसाः रि न के व क या द्यः उ पा सं न या दां गः स नान या दा नः प य र्ग र्ग का या न भु द्य ह लं ॥
 रु चं रि क न च ल क या कः क्षा म ह ल क या कः स रु क मा ना व चालः रु क न या क साः प र्ग ना रु ह भु वि रु नं ॥ रु
 चं वा म ह आ ठि याः रि ना रु न भु द्य रु नं दा व ल मा न रु क ह मा दा या थ र्थ रु ला ॥ ॥ म ध्या ह व स न
 रु ह्युः रि ना की ना म्दू ४ खि कः प्र मा दा थि व रु य म्दु रि ना रु ह भु वि रु व रु ॥ ॥ ग्व न ध म य पा न या रु
 ह्यु सः क रि क या अ न भि अ लं ख ना प य रु क साः इ दू ना प य रु क साः क रि न प य रु क साः क रि या वि वा ल रु ना ॥
 थ या प्र मा द न ना नि व रु नाः थ क या रु न साः ख चो य रु न म्दू रु नं ॥ ॥ पी ना व ह य व य रु य पी क रु

न वि व र्जि कः स्त्रा ना दि प चा स न वाः न दि म क भु द्य रि ॥ ॥ रु चं ग्व न ध म व र थ व रु नि रु न सां पा रु वि स
 ष ह्य म या दं ना दा प रु व रु क म य पा ना दिं रु लाः उ पा सं न वा दा नः स्त्रा न या दा वः प य र्ग र्ग का या न भु वि रु
 नं ॥ ॥ प ना रु द ह के क चिः प्र मा दा थ दि रु क रिः उ पे वा ह्य पि ना रु लाः स प ना रु न भु ध रि ॥ ॥
 रु चं जि धा न प र्थ कः क रु चू ना व रुः रु चं क्का या व रु कः अं न रु न सां रु क ह या दा या स प ना रु ह भु वि रु ना ॥
 उ पा ह क या दा नं रु ना ॥ ॥ रु ल जा थ ल जा ख जा नां स रु क नि ह्य व का ४ स्त्रा ना प र्वा ग व नः स प ना रु
 भु ध रि ॥ ॥ ग्व न ध म व क प नि स नः लं ख स जा रु रु अ व रु क थ न रु जा रु रु व व रु क आ का ह ह वा स

कजयंक्रिः थ क या मा न् रु क न या का पा यः स्तान या य ड पा स न चान मा लः स फ ना कृ षु वि रु भा ॥ ॥ सू ना
 पा न सू वि ना सिः रि कू र्णा च वि हा य क ४ प्र मा दा ला रु मा हा दोः सू ना पा न रु व र्ज थ क ॥ ॥ ग व न ष म श याः
 न स व न पा नः प्र स वि रु र्णः वि हा य न रि कू या आ क म क व प्र मा द म क वः ला रु न स वे ज प म क वः सू ना पा न का
 ल क मा न ॥ ॥ रु मा वि धा ल क वा लः व र्ज क न दाय कः व रु मा सा य वा स न यदि डी व रु या भु वि ॥ ॥
 रु ना रु क न पू दा सः गा न क मा ली वः ड ला द नः वा य वा या व गा नि ड रु ला रु ना वा ल ख रु का लः गा नि व थ क
 या दा ख न म द ॥ थ लि व धि य व गा न कू र्ण ता स्ताना दि या का न वा य थ व न स भु वि रु र्ण ॥ ॥ य रु क र्ण हान

पूर्व ष य द्वा य द्वा च क र्ण षी ना सि भु वि पा र्ण वि हा य स्ताना नि प ॥ ॥ रु र्ण ग व म नू क न रु नी नः पूर्व क र्म न म श
 पा न हा व य या या थ क या स र्दा भु वि दा य रु का म दू द व पू जा आ दि नः थ र्थ ग्ग नि व क म या दा य म द रु ना ॥ ॥
 आ चा र्ण नां क थ मा नाः ह व रु मा ना ह व म स खा पि रु ह व स मा रु ना षी मि या नी रु गि नी क थ क य षी नी दू रि गा ह्वे
 व वां ध वा ष न म ग क धा नी प्र व र्जि का कू र्ण व र्ण ह षी य कि व रु ना ॥ क र्ण वा रा म नी ग रु कू स प्र व गु व रु क त्य कि ष गु नू
 क त्य क म रु पा र्णः व रु ल प मि वा षि र्ण व रु क रु ष य वा स न या ल ला र्ण न म य क ॥ ॥ ग व न पू गु व रु क त्य क धा या
 म ग र्थि म व जा या र्ण या मा ना थ व मा म स स न या मा म च मा रु नि नि मा मा म या मा म मि या या मा म क रु क य षी याः

वाचकि नहु दृश्यं चैव कया नीयं कृन् नहु दृश्यं धर्मा क्ता मया इः सक सक क कृत्वा ॥ ० ॥ वकी ना न
 कपि लुक्ः कि कृ नी च कथे व च ध चैव का पा हा का दि नां द क्ष पि लु प्र दा प थ पु स र्व वा द क्ष पि चै हंः लु चि
 रु मा पृ थ क य थ क ॥ ॥ गामि कि नः व क या दं चो द याः कृ ग्व उ पि लुः कि कृ यां कृ ग्व उ पि लु कृ ना ॥ चैव क
 या उ पा हा क यां स मे रु यां द क्ष पि लु थ य मा न कृ नाः लु चि कृ का थ व र य मा न कृ ना ॥ ॥ द क्ष द्वा द क्ष य क च
 मा स क च य था क म व कृ कृ पि या व व ॥ ॥ सू या नां च लु चि रु व क ॥ ॥ वा कृ लः कृ पिः वे वः या न क्रि यः
 यै कः सू द या थ क य मा न कृ ना ॥ ० ॥ स ग म मा रु व धू नाः क्रो न के ना वि वि य कः प च र वा र था व र्जुः की थ

स्ता ना लु चि स्ता मा रु व धू न कि न कृ न य था क मः रु गो नी न द न ह्ये वः दू ही छि दू ही ज्ञा प को त्व सू न ॥ ल सू क
 वा पि मि रु वि श्रा स र्वा ध वा ॥ क मां य क कि मा कृ न स्ता न मा कृ न लु कृ पि ॥ ॥ दा स व न क या य मा न ग म द
 न मा म व व या क्रो न क म्मा दि नी य च र ग वः व रु कि नः कि थ त्वा न न लु चि कृ ना ॥ ग म न म्मा म याः कृ न ना च र व धू
 कृ न याः कृ कृ या य ध कः धा न माः कृ या का य म न व न म्मा चः रु नां म्मा च या ल न माः क्षा न या मि रु थ कि ज्ञा दि
 नी छि ना कृ न लु चि कृ र्वा न मा कृ ल ग क कृ ना ॥ ० ॥ पि लु प्र दा न पू कृ ल या रू क न वाः पू कृ ल व धू
 कृ ल यः स ग म्मा व ध व दि रि हा ॥ ग व न म्मा नू य या पू कृ न पि लु थ य कृ नाः अ थ वा पू कृ म द न दा वः म्मा च न

भयं नो ॥ अथ च मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना
 पश्यः न कुरुते किञ्चान् नथयं नो ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना
 गलः न कुरुते किञ्चान् नथयं नो ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना
 वाहकः न कुरुते किञ्चान् नथयं नो ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना
 भावः न कुरुते किञ्चान् नथयं नो ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना
 डाः कदाचिन्मात्रेण ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना

नीचे न के पाया

एतन्मात्रं दद्यात् ॥ अथ च मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना
 द्वापां ही ३ ॥ अथ च मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना
 पापमात्रं कदाचिन्मात्रेण ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना
 कापवासनं ॥ अथ च मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना
 यस्य प्रथमं कदाचिन्मात्रेण ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना
 हावः कदाचिन्मात्रेण ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ अथ मदनदावः किञ्चान् नथयं नो ॥ ० ॥ समाधिः यत्ना

वलाहः
 समाधिः

दिंप्रतिदक्षनेः॥ ॥थनलिनिद्रकूङ्कडवसांस्तानयादावसधर्मपा०यादाजथमयादापापप्रकिद
 क्षनायायथनविनगुनिलुनदावपावक्षयायशुभा॥ २ ॥रुनियदिवसमाशिरुनिर्वोकल्पमजाचिः
 नक्षत्रमन्त्रसर्वपापाय॥मन्त्रजापसमाचयन्॥ ॥रुनास्त्रकूङ्कडगथधावसाचकमनयादस्तानयायः
 पजायायचैत्यपदकिक्षयायभवनंयानकावःरुनमनादिपावक्षयायथनसमरुपायनमाशिरु॥ ३ ॥
 चतुर्थदिवसमाशिरुनिवादावसमाचयन्नास्तानदानादिकंसर्वचैत्यपूजाकुकाचयन्॥ ॥थद्रुकूङ्कया
 प्रमानःगथधावसापावक्षयायमन्त्रविनोदाननमानस्तानयादावचैत्यपूजायायगुनूयाकडय

रुल ४

प्रदकि

४५

दक्षरुन्या॥ ४ ॥किथेषस्तापयनिर्वाचैत्यादिकंनक्षत्रचपूजयित्वाविधाभनकाप्रयाथादिविहाव
 कक्ष॥ ॥चैत्यादिनाहनैकयादिरानेकुविहावदक्षचापिकूपयनानीच००कादूमप्रचारुक्षरुसंस्व
 खगावाङ्कायानवरुनदानकं॥ ॥थकयापयाकावक्षससदीकिथसस्तानमयायमन्त्रजाचैत्यपूज
 मयायमन्त्रजाविधिपूर्वकनजापया०काप्रयायमानरुनैगनजनसाचैत्यव्यहानशुवसाक्षरुनयैरुयः
 मानरुनैःअपिगुणिदिमिआदिनैकीरुिदयकंभजाथमरुयाथयायमानमरुकसाथासुक्षरुयवर्नमा
 चरुनैःक्षलकिमिगाध००विमानदूलआदिनदानयायमानरुनैरुमिदानकन्यासुवर्णनलजूरुय

89

किमि

अष्टावक्रिनसंरुतं सर्वधामनिविष्टमधर्मासहकानूलिकानाथः दहिभगवत्पंचकं ॥ ॥ रुगुनमहाका
 नूलिकनाथः विद्वन्नक्रियनियंचव्यक्त्याकानलधामना समस्तकथोगनपनिर्णयकाशकयधनीनः ग
 थधामनाः विपश्चिः श्रीविः विद्वत्तुवः केकूटदः कनकमूतिः कास्थपः आश्विर्दुःधसुधानपनिस्तथवः
 यगसः समस्तधामनुदुष्टशयकयाकदयकाशकयागुः थपचगव्यः कलधामपनिस्तनः क्रियनिरुक्तनूत
 वक्तुशयाशः विस्यविज्ञायमानः ॥ थलिकः आरिषकः पचगव्यवियः वाक् ॥ ॥ नन्दारुद्राज
 याशोभ्याः कपिलायकपावनिः सर्वपापविनासार्थः प्रसिद्धस्वसंमारुनी ॥ ३ ॥ वमुकसकटासंहाय ॥ ॥

थनलिसिक्काधिवसनः मधुलधिनकः स्वानः कितनः पृथ्यायः सनाकनः क्रमापनः आसिषः चिकपूजा
 दकृष्णः वाधो निसलाः कृष्णारिषकः थलिलंघकायकलकायः रुगनमथिकैलंघरुयाशः दवस्तमानक
 कयकः गुनप्रमुखः सकनरुवियकः पूतदकृष्णकायः कमावेकायः दिगुसमचः कामालियासिधस्वा
 मोहनिर्गियः आकृष्टः समयाचक्रः मथलिस्यस्वाकृतिः विसर्जनः मधुलः कृष्णकायः वलिकायः सखनवियः
 कोलाः गलचक्रः धर्मागनिः मुखदुष्टः ॥ ॥ कियायचिरुविधिशलाशुर् ॥ ॥ ॐ ॥
 संसाधनः अनिरुलोकः घटनाकिगसनः ऊनमस्तुपवधनः संसाधन्याद्विसहकः प्रपातिविविधोत्रागः

दद्यादि न तो ॥ नागद्वयादि न कुंवाः सन विच न कः पापपू हो वयूद्ध कः उर्वरुत्वा नृ ला काः मि रु व न
 रुत निः व भय कृति का हा ॥ ॥ ग न व म षा लो क नः स सा न याः अ व का स ल ह नः ग थ धा व सा
 थ स सा अ नि ल धा यः स मू द या नं ष ह लिः कू धा व सा नाना नागः इ ४ खः थ इ यः आदि न ल ह वि श या
 चा ६ थ स सा लः स मू द ह नो थ स मू द या ज न रु कू कू धा व सा नागद्वयादिः अ नं ग रु स या नं ध धा
 नः पा प अः पृ ष्ठ अः म ह यू द या दा अ चा ६ थ थि गु क ले ज रु नः स य कू या दा अ चा ६ थ थि गु अ व रु
 नाना प का न या य गुः स नृ ष्ठ ष मि या अ स सा न याः अ व रु काल ह नं स रु व ह याः ॐ ह व न ॐ ह व नि चिं रु

य पा अः मि का ष च क स द वि स अ नं ॥ ॥ ॐ ॥ क क ४ का ला ष्ठा पू जा वि धि सा रु न क स रि गु दी न
 स या व का ला ष्ठा पू जा वि धि पूर्व क नः गाल ला च र्क पू जा या यः सि धि स म य ष्ठा ध न गाल ला य क्रि या न
 सः गी क स रु ॥ थं लिः सि भू न रा क स रा ष्ठा सो ध न या यः ४ ख लं ख न रा य ॥ अं धु ला रु कं रु द ॥ व र्ज थि य ॥
 अ म द नि व जि रु वः व रु व न्ध २ रु ॥ थ न स रु थ यः मा ग गु न नि स स नः ख स रु आ दि नं दि ग स रु आ दि नं का
 नः का न स रु मि का ष स रु प र्थि कः थ य धू न का अ न क च द नं रु का रु या नि र्ग पा नं न य ॥ ॥ द गु लि गी
 क स रु ॥ कृ ष कृ म् न्या षः गी क स रु ॥ पा ष न्या षः गी क स रु ॥ लू प मि वी ज न य ॥ थ लि व लि पा क रु ॥ न य च ल

रुद्रक्षयायथसमश्राद्धानक्षयाययथाकुरुक्षयायअप्रमिक्तमयलययथायथगन्धनक्षयायःमन्त्राद्धानक्ष
 यायथिसिन्धुलसुसमूलमरुक्षयायधर्मादयानयमधुनक्षयायसगीर्णनिर्मानादिनासिन्धुनयूजाविधि
 र्थगीर्णमोचकेप्रह्लासमयगुनयूजायायप्रह्लापायनिष्कसनःरुद्रोक्षयमानधूमागानियर्थर्तक्षयमा
 नार्थलिकमापनयादृष्टावाक्कक्षययथागनयूपयूजायायमानःयधर्मागथाप्रमिष्टादवयू
 जागीर्णसहपलिवानयूजाःस्नाननानगुनयूजाःस्नवर्षदक्षःवस्त्रादिदाहानयःयथासकथ्यथनयक्
 क्षःक्रमापनःअरिखकःश्रीबीवादःसिधुःमार्हनिष्ठयसग्वनःश्रुत्तलहिवकःरुद्रसायकःश्रीगिनीथाय

क्षयाद्यवःपंचायनायूजायादृष्टाप्रकपापलज्जायदवस्कर्यनयाचकःसरुद्रसायथविधिर्यक्षना
 कथनरहिलकधूनकाशःथनसमयाचकःगक्षचकःधूमागानियर्थर्तचरुथीयूजायायमानरुद्रा॥
 र्मिकागक्षयूजाविधिः॥ ॥ ॐ ॥ सयकासानीयूजाविधिमाह॥ ॥ वृक्षयागिनीयाचिकः
 चायनचावर्कआदिनचाययथक्षालिसहिकस्त्रयक्षयायधूनकाश॥ गुनपादाययूजारुलजापयक
 गुनमधुलसिद्धकयकःमधुलधिनकःलखवलिष्ठयःप्रिसमाधिःधूपःकुरुक्षया॥ धनलिदवनायाश्र
 सनयूजाःस्नानरुद्रालकस्य॥ ध्यानवाक्॥ ॥ स्वद्विजश्रुकावक्षचमधुलःरुद्रपनिश्रुकावक्ष

सूर्यमधुर्लङ्घिताः अगनिष्टरुवनंगत्वाः अनादिसंसिद्धिः रुगवनीवज्जवावाहीः शुक्लवर्णसूत्रः
 पिनीः रुगवनीदृष्टः हानसत्त्वसमयसत्त्वः अकीकृत्यमनामयीरिध्यपूजयन् ॥ ३ ॥ रुगवनीवः
 जवावाहीप्रवनसत्त्वमायः योशोधयामि क्रमेण प्रमिष्टत्वाहा ॥ ४ ॥ वेहा ॥ ॥ धूपः नीर्वालाहा ॥
 निमःस्तानेः धालाः वनेः रुजः स्त्रीः नेः मरुः ॥ पृथ्व्याभा ॥ यैः लोः धैः सुः ॥ जापवलिदक्षः ॥ मोहनेसाधन
 ॥ ॥ धनधनकाशः जापस्नानवियाडाः कायकनकाय ॥ ॥ अकः रुकियः पंचमः सयः नवमं विहा
 षट् ४ चतुर्विंशति कृयावन्ः दानवाश्च दयाखल ॥ खानपानं तथापयैः सत्समांससमन्विताः रुगवयन्पूजयै

दवीः नर्सकैरुदधैश्च वज्रवेद्यावनी नृपैः पूजयन् दवकासदा ॥ ॥ कृमाजीपूजायायः शुक्लनीडा
 स्वस्त्यः दास्त्यः कस्त्यः शुक्लनीडा अदिकनं नियपेक्षनं कडा थडासध्वाथगयाडा अकसनया कवः स
 मस्त्यः खानः पानः सत्समांसः आदिनंदयकाडा ईला ॥ ॥ थालिजापस्नाननक्षत्रकाडाः लखस्यैरुयाव
 आशुसुसुविश्वचकाडाः स्नानरुद्रालकल्पी ॥ रुगवना ॥ ॥ रुगवस्त्यैरुद्राः आकाशलोसूर्यमधुर्लङ्घिताः
 रुद्रपानिवैकावैलः आलिकालिः दिगुनिरुक्त्यविष्णुमनः नानालोकधरुगत्वा अकनिष्टरुवनः
 अनादिसंसिद्धिः रुगवनीवज्जवावाहीः मधुर्लङ्घिताः हानसत्त्वसमयसत्त्वः अकीकृत्यमनामयीरिध्यपूजयन् ॥ ३ ॥

आ. पा. धू. नी. ला. ॥ थन ७ चायक ॥ स्नान. नक चन्दनन. सिन्धु नखय. के. ज. ल. ड. न. क. दृष्टि न किचक. पू.
 घ्या रु. न. ल. न. य. के. ॥ ॥ अं वरु वे वा च नी य दं रु. द. स्वा. हा. ॥ च. कि. ॥ अं. डी. हं. रु. द. स्वा. हा. ॥ क. लु. ल. ॥
 अं. ड. से. व. व. घ. ज. कि. नी. य. व. रु. व. रु. नी. य. व. रु. वे. वा. च. नी. य. दं. ३. रु. द. ३. स्वा. हा. ॥ क. लि. ॥ अं. रु. ४. ने. स. रि. स्वा. हा.
 दं. वा. घ. द. रु. दं. २. रु. द. २. रु. दं. ॥ ला. च. के. ॥ अं. वे. हां. या. डी. मा. रु. डी. दं. २. रु. द. २. ॥ भ. व. ला. ॥ ॥ थ. लि. डी. ल. स.
 स्नान. मा. न. न. वि. शं. जा. य. सिन्धु. न. वा. ग. क. य. ना. चायक. य. च. हा. नि. व. रि. य. थ. न. रा. प. य. के. ॥ ॥ वा. के. ॥
 अं. न. मा. रु. ग. व. ल. वी. न. वी. न. व. वी. न. य. ला. दि. ४. ॥ अं. क. न. २. क. न. २. ला. दि. ४. ॥ ॥ अं. ने. मा. रु. ग. व. ल. वं. व. रु. वा. ना. ही.

थं. दं. २. रु. द. ॥ अं. अ. रु. कि. न. अ. य. ना. डि. ०. ॥ ला. दि. ४. ॥ ॥ अं. था. ट. र. ग. रु. न. २. या. ला. न. किं. कि. नी. २. ला. दि. ४. ॥ ॥
 ०. मा. ला. म. रु. न. रु. क. य. न. ॥ ॥ आ. स. प्र. स. ना. य. मि. पू. रु. नी. य. म. द्ये. व. मा. त्से. व. न. पि. व. रु. द. वा. ४. का. य. डि. रु.
 मा. रु. न. स. य. डी. व. रु. या. नो. रि. न. मि. ग. क. रु. से. रु. व. चि. रु. व. न. रु. व. कि. सा. ना. क. न. रु. नि. य. ना. व. ना. डि. ॥
 ग. व. न. व. म. न. य. ला. थ. म. य. न. मे. व. नी. पू. जा. या. य. क. ला. न. ही. पू. जा. या. य. मा. न. वि. व. न. न. म. क. व. म. य. मा. न. य. पू. रु.
 या. दा. व. थ. रि. म. व. रु. या. गि. नी. पू. जा. या. क. म. व. रु. या. व. स. या. दं. ना. द. म. या. क. थ. रि. ग. रु. ल. रु. ना. ॥ का. द. ॥
 नी. द. न. हा. स. अ. र्से. रु. व. रु. न. सा. म. रि. रु. गु. रु. न. रु. ना. स. रु. व. या. य. रु. क. सा. स. म. रु. स. रु. व. सि. दि. क. मे. रु. ल. ना. के.

त्वं श्रुवा ॥ ॥ अथ कथं न काऽपि चित्तामसि कथं नाचायकः धूमांगी शशिनी याचिह्न चायाव श्रुवा
 यवयः मधुलथवर्कः सकलसर्गः स्वानकः अमिवाय ॥ अथ कथं न काऽपि चित्तामसि कथं नाचायकः धूमांगी शशिनी याचिह्न चायाव श्रुवा
 ॥ ॥ ॐ किं श्रीवक्र शशिनी यज्ञाविधिसमाप्त ॥ ॥ ॐ ॥ न कश्चिद्वात्मनामविधिमाह ॥ ॥
 ॐ दंभं सर्वमनूनामरिचकमनसाः रावया कुर्यात् कथं भियर्गः मनसर्गयश्च ॥ ॥ ग्वेन वक्रवाक्षदेवता
 यज्ञाविधिह्ययधूनाः थवहा नीलहा वायाचकः यर्हं केमेया रावना क्ता यथाग्निनथ व ॐ कुरु लजायः
 दश अर्वा ॥ ॥ ॐ किं वाक्त्रवमुनिपद्मानसहा मः स्वदेवता यायवाक् न दूया लवक्रसत्त्वः नृपान

वाययथाक्रमः स्वस्वरावशुद्धावेवाचनादि स्वरावाननूपादियः कः कामान् यथायाकि ४ निनिसर्वउपश्रु
 ॥ ॥ ग्वेन वक्रपिबनयाः रुचक्रववमुक रुचं विदि ॥ इहाया कृधा नसाः स्वाद्यराक्षनश्च चाययः थनर्पव
 कागुहः थनपहापना नाशायषटवसादिः दन्या रुचयद्रुना ॥ रुचं मधुलदेवताः रुचयचक्ररुनाथी
 सवक्रसत्त्व आदिनः वं वाचनपरिहीनः समस्त देवं खने रुना निहीकानेरुना याय रुना ॥ ॥ राऊनः
 कालरुसराक्षः सर्वसमताः विशुद्धममृती कथं नारिकुलुनलालि किर्हः रुचकसत्त्व देवता चक्रः रुकपाः
 यादिना विधिवक्त्रं कथं यदि किं वाक्त्रवमुना धा नः कामा मिति ॥ ॥ ग्वेन वक्रवाक्षदेवता नारिमधुलनः

48

मान. गुन. म. ल. द. न. क. गु. नू. या. क. अ. ध्व. ष. ष. या. य. ॥ ॥ न. म. रू. ह्वा. न. नू. या. य. न. म. रू. रु. व. ता. न. क. श. अ. य.
म. गृ. ह्वा. य. थ. नि. म. नू. ली. क. न. म. रू. ॥ क. का. श. ह्वा. न. क. म. रू. द. न. रू. य. नि. य. श. ह्वा. न. क. म. रू. द. ॥ ॥ ग. थ. ध्व.
न. म. रू. अ. शि. ष. क. श. ह्वा. न. क. म. रू. ॥ ह्वा. न. क. म. रू. वि. श. अ. क. श. ह्वा. न. क. म. रू. ॥ थ. क. श. ह्वा. न. क. म. रू. ॥
लु. ले. या. य. ग. ल. म. लु. ले. म. ॥ आ. स. न. रू. च. न. य. ॥ थ. या. लि. व. दि. ग. का. न. न. या. य. म. नू. ॥ ॥ अ. न. म. नि. ष. रू. न. व.
य. वि. लि. २. सि. वी. २. कि. न. नू. य. ल. म. रू. ष. व. श्व. २. व. श्व. य. २. रू. रू. ह्वा. का. श. अ. क. श. ह्वा. न. क. म. रू. ॥
थ. न. लि. षि. म. म. धि. या. न. या. य. जा. य. धू. प. व. लि. वि. य. द. व. य. जा. क. म. नू. या. ह्वा. थ. म. या. वि. धि. थ. स्वा. न. कि. न. नू. य. जा.

दक्षः स्यात् यथा कृष्णः ॥ धर्मस्य पादुका न जानन् कुरु स्यात् ॥ धिस्मिन् क्रिदि व्यञ्जनः किमनिता १२ स मन्त्रमाथ ॥
 अन्यदपि भवता माथ नरुजा ॥ धिस्मिन् कर्मवर्जिनरा स्यात् समा दद्यात् ॥ कथायुक्तिराञ्जनः वलिका यः
 कः काननिस्सं धविस्सं दय रुनी ॥ धर्मधूनकाञ्जः रुकाञ्ज नयायः धयेलिवः गीत का नायि धलिगीत
 गुरुजिन ॥ ॥ धर्मधूनका वः मूलपूजाः ऊजा मानयेनिः हिवसकि १ रुकनडा दावः आचार्ये नवल्लि
 पाक १ वियः कुरु न्या मयायः सिधु मादुनि साधनः मानसा कदा विस्थाय सयाञ्ज रुनी ॥ ॥ धनदवया
 कः आगन रुस्यं लेवलाय ॥ ॥ ॐ षष्ठा समखा दाने रुः गुरुनेयु गलो सवीरु नक्षरुषिता ४ अकिवि

रुत्रगुप्ता रुकाः मनाविकल्प नदिता सर्वानया धिक्ता मरुप्रथ कंद दयात् ॥ ॥ रुमिष्टादूरवान रुयाव
 आदः धिस्मिन् रुः समस्त आरुने लमिया वः समस्त गुलने सं रुक रुवः समस्त कल्प मानगा वचादः धिस्मिन् रुः
 नः पादु विहाय या रुकः स्वाञ्ज नदि वकः गीतः दाञ्ज रुनल ॥ धनखाञ्ज कायः वाय ॥ ॥ स्वागं धर्म जा
 जानाः मद जागु विवर्जि कक्ष दना दैक विनिर्म कः कल्पे के नसि कं लया ॥ धर्म वाय यादं काय ॥ रुगया यमरु
 ॥ ॥ अंसर्व रु आगता मरुः स्वादन वज्र रुवा लका दं ॥ धनमान का लदियः धूनकाञ्ज थायर्स नाथ ॥
 धलि मानसा रवायु का कि नदिय ॥ धनचिक्ता म विविये क ॥ धन रुज मानलः गलम सुल द्रुप चा दावः कि ग

समनरुदकायागुं राखमलुलमरुमं॥ २ ॥ सर्वलकनसंपूर्णः सर्वलकलवर्जितः समनरुदवाचाः
 गुं धारखमलुलभाजपि॥ ३ ॥ सर्वसत्त्वमाहाविर्लुब्धप्रवृत्तिनिर्मलः समनरुदविरागुं राखमलुल
 मरुमं॥ ४ ॥ संपूर्णसर्वजगत्समनो नथपदं सर्वनानाकिंसाः पीत्वा सर्वविकल्पः मोहकचर्षाजकि
 नीह नूकाकिनाः यवर्कपाविबर्कः किनगुल्लानेद्वयः मोहपदं यस्याकस्य कृपाहुनेह स्यमेनसाः नित्यं
 प्रसंभुवह॥ ॥ यजंगमाभ्याः प्रकथेवस्तु वनाकसर्वसत्त्वाः सुखिनारुवकु॥ ॥ आक्रान्तमगुं नवदव
 पृथ्वीवर्द्धनमस्य धं हामुसुस्मि॥ १ ॥ यजंगमाभ्याः प्रकथेवस्तु वनाकसर्वसत्त्वाः सुखिनारुवकु॥

५७

आर्कविनागं नवदवपृथ्वी धर्मनमस्य धं हामुसुस्मि॥ २ ॥ यजंगमाभ्याः प्रकथेवस्तु वनाकसर्वसत्त्वाः
 सुखिनारुवकु गल्लानेद्वयः मोहपदं यस्याकस्य कृपाहुनेह स्यमेनसाः नित्यं ॥ यानिह रूपाणि समागतानि ॥
 वलिसमनरुदकायागुं राखमलुलमरुमं॥ गुन्याकनायविशदक्षपकिरुयः स्यात्सायः काललिकायः सिद्धपालेलहि॥ अनाकन
 स्वा नक्तकायः मुखगूढः आभिषेदीपदानः॥ ॥ किं सखाचलविधि॥ ॥

सर्वविशेषं २२ रुद्राणां पूजादिजनः शुद्धाभः वस्तुदिलभनकां वलादिउपकायनिर्झरन॥ लाक्षादिमुनि
 जायमाने वा शिवल्यपहा नादयः॥ कोमालीयूजन॥ आनादिवलिपूजनशिवस्तुमडाकासिंधुन॥ धाधननिलो
 नान्याः १४ जाय॥ सुस्तिवाक्कप्रमिष्टाग्राचार्यपूजा॥ नदनूकन्याप्रवृत्ताय॥ देवतापूजन१४ मल्लुलपूज
 सज्जनैवाद्यादिउपशेकनं॥ सुनाधियमिवलिविभर्जन॥ नदनूकन्यायां हंतील॥ धनशनिनाऊनेयाक
 १४ वस्तुदिविभर्जन॥ देवतादिप्रक्षामः पश्चात् वस्तुदिसर्वालं कालेकन्याविरुद्धा॥ ननस्तिवाक्क॥ नकक
 वृकसूवर्णमृदिकासिंधुनलाऊनसंगश्च देवागुपूवप्रदापयन्तापश्चात् कन्यायेसिंधुन॥ वाजपुयसमाजाहः

यन्त्रायम्भकसिंधुवरांजनकन्यापदापयन्त्रायम्भकगाथापूर्वगमनम् ॥ ॥ ॐ यन्त्रायगाथागमिमूलाज्ञानलाकः
 प्रणवनीगृहीत्वायासिनीयानि वृद्धकृत्यप्रवर्तिनीशास्त्रिवाक् ॥ नदनगुर्ववस्तुदिः उपकनक्षदानंदा
 नयथाकाकिदकृष्णः अन्वसंकल्प ॥ नदनमेष्टुल विसर्जनः अरिषकः आशिवादः सग्वनः प्रणिष्ठाजाज्ञानविनः
 राजनयथानक्रमनकन्यासमर्थयन्त्रायम्भकगाथागमिमूलाज्ञानलाकः ॥ नदनगुर्ववस्तुदिः उपकनक्षदानंदा
 यथाद्यादिप्रकृष्टवमनानीवाअनलोहामिन्नका ॥ सग्वनः गवमागायजनवस्तुदिः आलंका लउपकनक्षयवासन
 ॥ कन्यादानम् ॥ ॐ एयंसासर्वसत्त्वानांकार्थपरिपूजनी ॥ गृहीत्वायासिनीयानि वृद्धकृत्यप्रवर्तिनी ॥ ॥

२३

॥

पूर्वकल्पिकः अरिषकः आशिवादः सग्वनः स्वस्तिवाक् ॥ नदनप्रणिष्ठा ॥ नदनसहस्रराजनपलसवडुक्तिनदा ॥ ॥
 कनक्षवंधकथेवयजनः गणपतिगुणसः कृष्णः कामालिः थानायकिः वसापाः मयुजपिक्कि काकाकचिः कृमानीसूत्र
 नकसूत्रयययः लवादिः उपकनक्षयाद्यादिचमनानीलाऊनलोहामिन्नका वस्तुदिः आलंका लः सग्वनः सग्वनः सग्वनः
 लेः नूपल्लाधनार्थकृत्याच ॥ कनक्षवंधनं ॥ खयायिसर्वसंवृद्धा ॥ वाधिसत्त्वाध्वसर्वग ॥ ॐ हस्तत्वा कृष्णवासनीधि
 मोमिध्वमाधिमिध्वकर्तुमहसीकि ॥ ॥ अरिषकः आशिवादः सग्वनः प्रणिष्ठा ॥ आचार्ययज्ञादावविसः
 जनः कामालियजाः कनक्षवंधनविधि ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ नका अरिषकविधिमाह ॥ प्रथमगुर्ववस्तुदिः ॥

आचार्यसंरुचिरुयाः भानिकपूरिकादिषु यासादिकालकृष्णार्थादहाकत्वविचक्रवृक्षसामिहृष्टप्रसन्न
 त्माः सर्वसमययात्रगः सर्वविलोकनारिहृष्टः सन्नुभास्तुविज्ञानदः ॥ कापौदीकाप्रदानप्रतिष्ठासहाः
 यः हृष्टः भानिकपूरिकादिकः कर्मयायसः प्रथमसंगुनयनिकाशनागार्थिभूगुनवजाचार्ययायधानसाः भानिकसंलि
 कः कर्मयारुदसिजसः धनयदकायरुदसः समस्तलकृष्णसिबसः दहाकत्वसिजसः महाविचक्रवृक्षसमीपे ०
 यारुदसिजसः प्रजात्मासिजसः समस्तलानजाकसः अनकगुयादवकायः आदिनां नकृष्णसिबसः मज्जाद्यान
 हाआदिः भानिकसंज्ञाश्रुना ॥ वाचनावदिलहृष्टः ॥ अन्यथा लोकगंदिनप्रतिष्ठाप्रकृतीकयप्रजाश्रुतः

२१

॥

क

प्रवेगस्याद्विचित्रयभानिकः नागाधधर्मवत्मा नान्ननस्तुपिनावृद्धाधनायूसखदायिकाशाकर्तृवजसमाल
 कः पूरुषोपुप्रवदकपिणवस्तुस्यानन्दकः द्यावरिष्टदवनाकावद्युगसरुआलिः सुषिकंसंसदीयकना ॥
 रुनेव्याकनलकृष्णकायसिजसः जाटिकसवस्तु लोकसंस्वद्वियाकसः कर्माधंदवनाप्रतिष्ठायायरुजसः नाश
 याववकायसिजसः दहाकराखासिजसः अद्विवलथूडासः कयशक्तिनाकसः स्वस्यसंरुष्टः सदांजागनमकसः ध
 र्मसंज्ञसंज्ञासः थर्थिभूआचार्ययायमानः ॥ धर्मवजाचार्यनथायनायादादवनगार्थिगवरुलविचित्रधान
 सागुनयार्कः ऊजमानयार्कः धननारुः सुखनारुः हर्षकर्तृपूज्यश्रुल्लोकसंज्ञसवकश्रुल्लक्ष्मीवकः पूरुषो

यदि वयं वरुणधनपिअः पिबुलाक आन चरुयुअः गभाभादवनवासयायिअधानसासुसुयुगवासयायीः
 वयुधीयां आनययुवथथिंमगुनुरुनां उयाययुना॥ ॥ कमान्यमूर्कः गीकवायुयुयुदुरुहसिअ
 स्वयुजगवादिः मसिमूर्कवजादिना नलपनिनीय वूदुहावजावायुनगुहयु॥ ॥ रुनगथिअः
 वजावायुधनसाः गीकवायुयुयुहसिअव्यववनकलः अऊनकलः मसिमूर्कः रुनअदिनं लकलसिअम
 आवायुयायमानरुला॥ ॥ वद्वाम्यसमयगुदुकाकसवाननासिका रुवायुगाअधिकंग कूडावामनः
 र्वाजकाशाविकुनावला नोडाः हाथाकनाकूरुकाः पापीयाधिककिकिरुहादवसुयापडीविका॥ वाक

२८

अवधिनाः सुलाकनरवाध्वकमूर्कजाः सुविकाकार्कि कावेशासवकाः रुधकासुथादनुनाः शोषदासर्ववाव
 दागउकाः ॥ ॥ थथिंमकलकलवजावायुगुनुरुनां उयायमकवगथधनसाः अथशवकर्मगुयुः
 काकसवनः कासनंथकसवनगवनाहीनः रुकिनाहाकिमः ककडमधुसिअमः विनूयविरुकूनकवः अहः
 कालिः कादुलविरुयापयुः नागाहानः क्रियाकलमनाकः अदिर्कहानमनाकः रुयनः वयशुअमः अह्व
 रानः कादुवृद्धिः नृसिमरिदुः रुववावकनः कथकयायनवः सवकयोदुशवः मूनकाकः अयुमियादुश
 अमः कूफः रुनः वामनः गलनदः कलूसः रुडिः नजवगथथिअलकलगुनुरुनां उयायमकडाशुना॥ ॥

न के सु थापि ना वृद्धा धनं पूरु ना हा क ४ ना हा ना हा रु व द धि ४ क रु का न वि रु क था ॥ ना न का रु समा खा ना क रु
 म रु पु द रु था ॥ न रु स र्वा न प्र पू शी क क ल क र्मा सु स र्व दा ॥ ॥ ग थ धा न सा आ अ थ गु या ख ला य ॥ अ ल क
 न आ रा यी गु न रु ना उ न द व सा य ना यो न सा रु न द व पू जा आ दि नं क ड ध द क र्मे या न सा थ थिं गु रु ल वि वं ॥
 ध न ना हा पू र ना हा रु यी व ना रु स ना रु र्ग ने रु य व य न ना क र्म न न क ड नि व म रु रु ल वि य व थ थिं क आ वा
 अ क ल क र्मा सु या क ल ध म न ड रु ना ॥ ॥ ० ॥ न ना गु नः शि ष्य य नि नी याः ॥ य ४ य न ४ ध धा वा न प्र हा व
 न रु या वा नः का रु ना वी र्य वा न स स्वा न रि सं वी ध क ४ ० ० दृ षं शि ष्यः गु नं गु णी या क ॥ ॥ ग व न व रु क र्मे धा

२९

य स गु न न शि ष्य य नि का या य रु ना ॥ ग थिं क शि ष्य धा न सा ॥ धा व न प्र हा व न क र्मे या अ रि या य रि व क रु याः
 व रु अ का रु न वी र्य व रु स र्व स त्व वा ध ना या क थ थिं क शि ष्य गु न रु ना न रु ना ॥ ॥ य ४ स त्व व द या न रि
 क ४ ध र्म रु द क ४ स स त्व व वि र्ध व रु रु न च नि ना १ कि नू य अ कि म य ४ अ सं य क आ ला प्र सं धी य न दा य वा दि क मा ३
 चार्य य नि रु रु ॥ ॥ ग व न व रु शि ष्य या अ ल क रु ग थ धा न सा स स रु ला क या क द या म दू ध र्मे या रु द म दू ला
 प्र थ य य ड क रु ने क वि रु का क ल अ कि नी रि कं ७ न जा कि न य म दू थ व आ ला प्र सं सा या क म व या क दा य धा
 या क ख ला य य व थ थिं क शि ष्य ना न क मा न रु ना ॥ थ रु गु न न शि ष्य य नि का शि ष्य न गु न य नि का या रु नि ला न रु ना

॥ ० ॥ गङ्गा गुण अष्टावधना विधि मारु ॥ गुरु दीन स्याजः समस्त सा मा गो कान ना च कं गु नू या गृ ह स प
जा जन क ना ॥ गंध लि गु नू पू जा ॥ सूर्या र्घ्य गु नू म सु ल य च र्ग र्घ्य सिंधु कः आदि द व पू जा समय म सु र्थ ले स
का क नू प्रि स मा धि क्क हा स ग व स क क म पू जा दं ज पू जा वि धि र्थ ॥ ॥ शिष्य गु नू म सु ल द न क ॥ गु नू या क अ ष्ठ व
ना ॥ ॥ स म न्वा ह ने रु मा च र्थ अ ह म मू क ड पा ष का ना म शि ष्या ह ॥ अ रि ष कं सा रु ह्ना नं प्रा ष्ठ र्थ वि ह्ना य या म
ह ॥ ३ ॥ गंध क गा था धू न का वः क स्त न ह न ल म सु ल वा य क क ष ॥ म ध्वा स ग व न ३ ह न पू र्व नी ले द कि षा पू ष्यः
ना ग य ष्ठि म य म ना ग ड रु न म ल अ र्ग मा टि न स र्थ ना व क वा मू व ल स पू षी षा न क कं र्ग ॥ पू र्व ग ड द कि षा

[illegible]

39

अथ लिखामपूर्य विधिथं अलिखानयाय वज गह्वर अयूजा वन जात्राय र्यं गी गडत्ता हृदं विधिथं रु नाग
 ०० नि अरिषके विधि ४॥ ॥ ॐ ॥ अथ लिखी मनथ क्रिया विधि साह ॥ ॥ सफे सफे निव र्घा नि सफः
 मा सादिना नि वड पनय यथा कार्य पिता पुत्र नका नयन ॥ ॥ ली मनथ क्रिया मनूय सा गव वन सधन
 सा द्रय द न ० द्रय ला न द्रय दू न थ न द न रु डी पूरु पूरी प सने अथ डि थि रु न द्रय य मा ल ॥ ग थ धा न सा साः
 मा थि ना न ना व का डी कृष्ण यरु प्र निष्ठा ज थ विधिथं रु नाग ग्रह मलु ल वा य ग्रह मा रु का य क न का पा ० या न
 क मा न रा व रु क ल ठा रु प न मा न ॥ गु डाल २०० द्रय दू ५० थ न व न्द्र मा ख रु या रि मन थ क र्म धा य रु ला ॥ ॥

अ. कसायमानदसं गुनन. धीरवो दकनलूय. थवी नपसि सं. पिअसमूदनलूय. सर्वकर्मिक क्लृप्तान. त्वा न या न क
 ॥ जलंगलं लादि ५ ॥ ॥ थनलि नाया जानकं. वसा ला या अ. आसमसकसं. यच्छगर्वविशं. वस्तु आलं काल
 पृक्तस आदि. दिगभासं नअ क्ता य. नियक ॥ थनलि नअ गृह दान विविक ॥ आवा यनं काय दू ॥ सय. सा दान क
 करु वा क्त न या क विविक कुरु खं दा अ ॥ ॥ विप्र ॥ आदित्य ॥ क्षमा ॥ आचार्य ॥ मंगल. विप्र ॥ वृद्ध आचार्य ॥
 वृहस्पति आचार्य ॥ शुक्र. आ ॥ क्षनि ध्वन. विप्र ॥ नाद्र. विप्र ॥ कुरु. विप्र ॥ जन्म ॥ देव क ॥ १० ॥ वाक्मन लि क श्रु यः
 वृत्तिदान ॥ ॥ थनसू वलास. देवप्रेमि छाया य ॥ नैमल्यको क्षम. नथ या अ. गु. स. स्वस्तिक स कस्य ॥ ला व नाथ

३३

॥

निनाऊस. साग्निनका ॥ सूर्य विस्तृखडाला नन. वद्विस्तृजडाला नन जानकं. रुसा या सिनंति. अक्षमंगल या
 य. थशां पिने अरुन थया अक्षमंगल. कथे न दायकं नय. थया दथ सडाला रुसा कय. थया दअन. धिलो वनि
 ला रुसा कय. सुवर्ण या नथ स. रिं गु वलास ना ककं. स्वस्ति वा क्त न नथ स जायकं. लि रू क सा ककं. ना कन. कुरु न
 गाल क ॥ थन. कुरु. ध्वज. प्रताप. कुरु. चले सधि. ना क. मेधि. सि रू स्त्री. दा रू स्त्री. ना य अ. कुरु लय ॥ सि रू लय. वरु
 थिय ॥ थन अरु या दा रू स्त्री १०८ उषी व विज या धा न निधा न १०८ पद पं. मा दस स्वा न कुरु यकं. का य मया य
 नि सन. हा र या दा रू स्त्री १०८ यो जा दिय नि सन. अद्य या न क. कुरु नि स ॥ धीरव १ लटि १२ लं. का प ना पा १

सिद्धया क्रुगु ॥ यन्नन किंयनि सन गावा रुहि लंख धन थसं पूययनि सन गाव अक्रुगु हासं काय कृय कृ
 जयनि सन साला अरुय अग्निम सुलपद किंसा ॥ ३ ॥ नैअरु ०० शीमान कोन स अलिने काय सिंरु लेये
 ॥ गुजया दया सक या अ मरुया क न क वा कु म क क य क र म सु क कि पंचय एम ॥ अं यो ज्ञान यत्वा हा ॥
 थम नु न वी हि दू ज घु ना कृ कि सु ना या क न अथ अ निया च क ॥ व दान कृ य क च न कृ य ॥ थन ०० हि या य द क
 सा या सि य रु हा या य प्र कि मा द व प्र कि सा थि हा ले ॥ थन आ कृ कि द धा वे लि वि य ॥ चा कृ पू जा धि का धि ना
 स ॥ कि क न पू ह या य स ग व क य च क घू जा द क सा वे दा कृ य नि स ला ॥ श या कृ कि वि स र्ज न ॥ न क म सु ल ग हा

३४

कृ हा लाय सं हा न कृ हा रिष क ॥ कि लं ली य कृ हा हा य व लि कृ य ॥ द धा जा ना क उ म क ल सा कृ न कृ ज कं जाः
 का ज न ॥ ॥ थन द उ म र व क सं ल ख सं दू न का य ॥ ध उ स र्च वि य क ॥ का मा नी पू जा स म मा च क को ला स धि
 ला ज ॥ म कृ ट पू जा जा रु म ल पू जा ॥ ध मां गा नि स य व लि पा ल म क द म पू न य ॥ ०० कि री म व थ की या स सा फ ॥
 ॥ ॥ ०० ॥ अथ द व न थ क्रि या मा रु ॥ अथ हा मी कि व व र्मा सि मा सा नि च दि ना नि व द व न थ कि वि र वा र्म
 सह सु च नु दृ ष क ॥ ॥ अथ वा ॥ व सु व र्म स मा पू ह व सु धा वा र्म न कृ न ॥ अथ य क नी स मा वा वा कृ सि द
 च प्रो थ य ॥ ॥ द व न थ क्रि या य नि मा न ग थ धा न सा व र्म ६० ॥ द द चा ला ट चा कृ ट थ व न र्म ला या इ रु न

आशिर्वर्षसंपूर्णं न. थर्थं देव. दीनक्रियं च मा ख द या प्रमान थर्थं रुला ॥ न क स मा न क सा मा यि काल ना च क
 क न क र्मा स्तान या दं. यथा विधि थर्थं कृ. क्षय रू. सा ना प्र कि सा. स म ल्क था य ना या दं ॥ व संधा ना म लु ल वा य म रूः
 क सा य था र्म रू व थर्थ. श्री व संधा ना धो न नि या ० ०० एा दि प जा धन का ज अग्नि स्तु प न प्र थ मा कृ ति म लु ल पू जाः
 क्षी र व लं र व न हा य ॥ अं र व लु लो ह रू रू ॥ व रु ना धि स्तु न ॥ अं म द नि व किं रु व. व रु व न्ध रू ॥ रा व ना ॥ अं वं काः
 ना त्य ना सु व रू द ग्ध व रू ल लि ना र्म न ल नि धा न दा ना नं ज ल म अ लि रु लू कं व द्ध प्र ल म्प य र्थ नं द क्रि लः
 रु रु धा न ही ॥ सु व रू क ल क्षी धा र्थ धा न म अ लि वि वि र्ध प्र लू य रू क य र्थ नं न व यो व न संप न्ना ४ रा व य स न

३५

भ ह व नी ॥ आ या धू नि. ला ॥ पू जाः पू य ॥ अं व स धा न स्वा हा ॥ अं व स वृ षि पा न व स धा न स्वा हा ॥ अं व स धा न स्वा हा
 ॥ अं ल क्मी रु क नि वा सि न ॥ अं व रु ध न सा ग न नि धा वा य क था ग ना य ॥ अं आ र्थ व ला कि क ह्व ना य ॥ अं व रु पा सि य
 य कृ स ना प कि य ॥ अं ०० ला द वी य ॥ अं अं रु ल रु लं द्रा य ॥ अं व रु हा ना ग ना जा य ॥ अं वि वि कृ लु ली य ॥ अं क लि मा लि
 नी य ॥ अं म रू व द्रा य ॥ अं व न द्रा य ॥ अं गु फ द वी य ॥ अं स न लू मी द वी य ॥ अं च न्द्र का ना द वी य ॥ अं मा लि रु द्रा य ॥ अं
 पू रू रु द्रा य ॥ अं ध न द्रा य ॥ अं वे ष व ल्म य स्वा हा ॥ यं ला धं मु ॥ रु ग व कि व स धा ना. रु न मूर्ति न मा मि हा ग ग ल गु ल
 म ना न था ना न क्षी म रु सि दि ॥ अ स म गु ल नि धा नं का क न न ल व यो नी व रु रु न ध न धा नं वृ षि ४ सा ग ना न क स टा ॥

वलिविथगां वसुधा न ली दानिद दू ४ खर यरु न ली ॥ ॐ दं वलिगृ २ सर्वधन धान्य वसुधा नामां दही दयापय स्वा
 हा ॥ देवना दू कि ॥ थलि देव नथ क्रिया या यस्तु लस्तु स्यां दू का या अही मने या थं क्रिया या यस्तु ला ॥
 ॐ कि देव नथ क्रिया समो फ ॥ ॥ ॐ ॥ महा नथ क्रिया विधि मोरु ॥ नवनवनि वर्वा नि सासा निवदि ना
 निवामहा नथ क्रिया विरवा न द्वादहा सत चन्द्र धृ क गो द्वादहा वक्र वर्णा च द्वा ना यूप नू धा रु मक्ष सर्व वां प्रा क्षी रु ना
 नि द्वा ना यूप सत्य मान क ४ ॥ ॥ माहा नथ क्रिया पत्र मान ग थ धान सा गा गु य २० गु द गु ला २ गु दू २ द या अ
 द न कि अ नि हो ले १२०० व न्द्र मा ख रु अ ग थ धान सा द्वादहा वक्र वर्णि से मस्तु मन य या क्षु क्षु क्षु यूप नू य या ड

३३

रुम रु लो थ या पत्रि मान सा मायि काल ना चकं दू न क मो स्तान या र्थः यथा विधि थं कृ ण य रु सा ला प्र मि
 हा समस्तु था प ना या द ॥ ६ धृ ष वि रु यो म सु ल वा स्यं य जा ॥ ही ख लं खे न हा य गां ख लु ना रु दू फ दू ॥ व रुं
 थि य गां म द नी व क्रि रु व व रु व न्द्र २ रुं ॥ जा प धू प नि नां रु न ला रि न न क्रो ध्वा न रु व ना ॥ क ना अ स्तु ल
 च क्र म ध्व प्र कृ कि ग रुं द या उ धू वा य रु ग व न प र्थ न वि रु वा ॥ अ पा प य ना हा गां प्र कृ मि म हा धू षा
 य स्वा हा गां नू जा ग रुं द या धू षा य स्वा हा गां कि मि म हा रु दि या धू षा य स्वा हा गां म ति ग रुं धू षा य स्वा हा
 गां अ म रु ग रुं धू षा य स्वा हा गां म जा ग रुं द या धू षा य स्वा हा गां दू रु रु व ना धू षा य स्वा हा गां यं लां यं रु

ओं उषोषः कनिरासाः गगलं क्रिकि गरुया मलिन जानिकं कर्कः दूदूरि सु नमः सुकः ॥ भवलि विय
 भाजं य कृकि गरुया दया धी पादि नां ॥ दं वलि गृह २ ख २ खादि २ म म स व स त्वा नां वः ॥ भनिक न क्री क नू डं अ
 ४ रू फट् ला हा ॥ ॥ धनलि द व य जा द वे ना कृकि ॥ थलि म हा न थ क्रिया य मः न स्व र्णं द न का या अली
 म न थ या थ क्रिया या य रु ला ॥ ॥ रू मि स हा न थ क्रिया स मा फ ॥ ० ॥

३०



१

आग्नि यस्वाहा ॥ २ ॥ अथ कामाग्नि ॥ कलन कक ग र्ह काम नाग्नि मिष्टः कनू एदि न क नारु व क रुषा मः
 ना क प्रथम क न प र ग द धु का दू क ह कः क दि क न क य सः पा ह क लु द धा न र्ज न ल म धु व लु क्का य क सो
 रा लु ना र्गः व रु न क ट क ला यं ना य मो ली क्षि न र्क क्षि गु व न ना ना सो य मा न वे द य र्कः व ह क न ल वि धा न धी न ली
 ला प्र वृ ह ॥ ॥ ३ ॥ कामाग्नि यस्वाहा ॥ ३ ॥ अथ कादाग्नि ॥ का दान ला म हा ना गीः ख प्र या ह ह वि क्र मः
 नू ड मा ला वि रुषा कः दू ह सं हा न री ष ह ॥ ॥ ४ ॥ कादाग्नि यस्वाहा ॥ ४ ॥ अथ लाहिनाग्नि ॥ स च्छा न ना ग
 नू ना ग प्र च लं वि रा वा हृ क्षि न रुषा म न रुष ह श्री क दा रु मा कः छि रि सा न न र्ग ॥ ॥ ५ ॥ लाहिनाग्नि यस्वाहा

॥ ७ ॥ अथ अमृताग्नि ॥ अमृता काम हा व किः क पि ना रु म स म व पा च रि ना म हा क र्कः स त्वा नू य द का न क
 म क क ह द लीः पा ही क लीः व रु रु जा व म स गु लि मा ला वः प्र व लु स म का क लं अ र्क सि लु क्क य पा दिः रु च क
 ली दि क क य नू ख प्र वृ ह ना न ह र्कः क लु क म य र्क द क ॥ ॥ ८ ॥ अमृताग्नि यस्वाहा ॥ ८ ॥ अथ जनाग्नि
 ॥ ज ना क य क दि न ना व मि का ४ स वि वि णु व हृ क न वा नू का य ४ वि वि धा म्ब ना ल क क रु मि का ४ स नि
 का क या ह क म लु लू रु क ॥ ॥ ९ ॥ जनाग्नि यस्वाहा ॥ ९ ॥ क र्क य क ना ग्नि ॥ क य क ना ना म हा य वः
 किः रु पि लु का ह क ट दो फ द रु ४ क या ह व कि रु लु क न न र्क मा लि क पि ला ह क ह ॥ ॥ १० ॥ क र्क य क ना

२

गमिन् यत्वा हा ॥ ८ ॥ अथ कायसाग्निपाय करि नवर्ष उर्ध्वपक्षः विविध कायसाग्निपायः ॥ कृष्णसः
 गाजिननिवर्षा निरुपाव भान्नी उट कायधनं वनदा कृष्णसुहृद सुधनं विराय निरुसा स मायक स
 दुष्कसुहृद सुधनं दधानं विरुसा न विरुय स सुहृन् ॥ ९ ॥ अथ कायसाग्निपायः ॥ १० ॥ अथ कवा
 दाग्निपायः कवा दाग्निपायः कवा जी प्रवर्षः ॥ १० ॥ पड के नी ल स न वी क य वि ॥ ११ ॥ रव जी क सु से कु मा लीः पि क क माः
 कृष्णसुहृद सुधनं ॥ १२ ॥ कवा दाग्निपायः ॥ १० ॥ अथ मा नू काग्निपायः स न कृष्णसुहृद सुधनं
 हा नि न सा नो स नू को न ना म क षा नि न कृष्णसुहृद सुधनं ॥ ११ ॥

२

२ से का ति थि र्वा ल यु ता - क ता प्रा शे वे गु रो भे भु वि व द्दि वा सः ॥
 सो र्वा य हो मे रा शि यु ग्म शे वे प्रा रा थ ना यो दि वि भू न ले चः ॥ ४

४

९ ॥ अथ मा नू काग्निपायः ॥ ११ ॥ अथ य मा हाग्निपायः मा नू ना ना म स भान्नी क स र्तिः स पा क ला कृष्णसुहृद सुधनं
 विरुद्ध सुधनं य क वा न नैर्षः उ ग य व धा क ल न ल मो लि ॥ वि वि रु स रु न भान्नी व क द क कृष्ण ल ली लो स्य द यः
 अ ग धी ॥ ग ह क का स र्व व ल प्र दायीः पि द सु क सु प्र रु स स्य व कृष्ण ॥ १२ ॥ अथ मा हाग्निपायः ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥ अथ मा हाग्निपायः ॥ १३ ॥ अथ मा हाग्निपायः ॥ १३ ॥ अथ मा हाग्निपायः ॥ १३ ॥
 कृष्णसुहृद सुधनं ॥ १३ ॥ अथ मा हाग्निपायः ॥ १३ ॥ अथ मा हाग्निपायः ॥ १३ ॥ अथ मा हाग्निपायः ॥ १३ ॥
 कृष्णसुहृद सुधनं ॥ १३ ॥ अथ मा हाग्निपायः ॥ १३ ॥ अथ मा हाग्निपायः ॥ १३ ॥ अथ मा हाग्निपायः ॥ १३ ॥

3

२भाक्षीपक्षात्तापक्षी

न. दधयं सर्वं सो ष्यदं पूजयन्नादि वर्धनवीनां सा रात्रय पद्म कर्षकं कञ्जावधिकं वंदीयं श्री कनं च दनादिकं
लक्ष्मीयदं च काम्यं ॐ ह्यर्थं सिद्धिदा वक्ति मूर्तिं दास्य स दवका ॥ ॥ ॐ किं होम रूलः ॥ ॥ ॐ ॥
रजो ज्ञा क्रु क धूपा निः दूवा कृ शु पूष्य कथा वस्तु दिना नालं कान् क दूनं पंगिरूलः य क न त्ना दिस मिथ य क स्व म
रुि दीप कालिनी आ दी विष्णि देव का या सर्वार्थ सिद्ध न आत्म हो मां प्रक्षारि क स्वाथ य दार्थ हनु नां ४ कृष्णः
व्याधि दृष्ट ख हान यः सर्व सत्वा नां न कार्थ अयु काल रु क पूज धर्म नाल रु क धर्म अना दी सर्व गण रु क ज्ञा य क
वृद्ध वर्जि कः दिय काला य दान वी कायः कृ म्मा र्थ हनु नाः हो मा दि रूल समे रु न ज क पू ह्य म ह्य रूल ॥ ॥

१ दक्षकर्म या अग्निदवना दू कि विर्यकं थ ॥ ॥ १५॥ मज्जालाग्नय स्वाहा ॥ धानि ह्यधनया ॥ १ ॥ ॥ १६॥ उपनाग्नय
स्वाहा ॥ सिमा कायन ॥ २ ॥ ॥ १७॥ मज्जालाग्नय स्वाहा ॥ जाग कर्म ॥ ३ ॥ ॥ १८॥ उयसुग्दाग्नय स्वाहा ॥ नामा कर्ष ॥
४ ॥ ॥ १९॥ प्रकिवाग्नय स्वाहा ॥ उयनयन ॥ ५ ॥ ॥ २०॥ स्याग्नय स्वाहा ॥ फल प्राशन ॥ ६ ॥ ॥ २१॥ स्वजाग्नय स्वा
हा ॥ चूज कर्ष ॥ ७ ॥ ॥ २२॥ समूहाग्नय स्वाहा ॥ वना दक्ष ॥ ८ ॥ ॥ २३॥ स्याग्नय स्वाहा ॥ समा वर्धन ॥ ९ ॥
॥ २४॥ जाग्नय स्वाहा ॥ पाणिग दक्ष ॥ १० ॥ ॥ २५॥ जंजंजं अग्नय जंजींजीं दू फट स्वाहा ॥ दू कि दक्षकर्म आदू कि विधि
॥ ॥ २६॥ नमो गंगा देव्यै ॥ नृष्टि स्थिति हि कर्ता त्वं जगत्स्थावर जंगमं ते स्मात्सर्व प्रयत्नं कुरुष्व देवी या

४

वने ॥ १ ॥ वाधिनी रोगादि द^{नी} रिडभा व^{नी} न्य शेष पाय जलमालोनि आया पूर्वेषु जनेषु कृता भूतेः पृथुसं
 चितानि सर्वाण्यपि मानि ०० देवता नीः पापं तु नाशानि निरंतरानि स्नानाय पृथक् कृतानि रेभिः जे नुरु रे
 ष्ये च तु सर्व भूता ॥ इति गंगा स्नाने फलम् ॥ ० ॥ तीलादु र्यत्ति ते सुधूः कूशेन श्रोत्रे च क्षुषाः मधुना नासिका
 वाङ्गुकिराक्षताः घृतोदरं दधिश्च कटिजानुश्च नोयन रुक्ताया दयोः अनादौ सर्वगत्रक जायते बुद्धवर्जि
 तः पितृदानं प्रदातवाः कायश्च स्था र्थहेना ॥ इति पितृदान फलम् ॥ ० ॥ गया गंगा त्वमावास्या त्पि दृसंव
 सवरदिने मद्यपि एषदातवाः न दोषो मुनिरेव विभ ॥ धी एठ यथा शिला क ॥ ॥ ०० ॥ ॥
 यं च पंचडबा का राः सप्तप चैरु लो दयं कुर्याः पश्चात्त त्पः समा चरेत् ॥ ॥

३

गङ्ग किं ४ मूका यका द कि नी गत्र मूकानीः स्रुपत्रिष नदवदरु स्य मूखव श्चामि स्वाहा ॥ वलि वद्यस्य ॥
 मूखव श्च वावहा नय ० क सिद्धि ॥ अं नभानि घात्र रुत्र वायः विनिश्कि जात्र नूयनः मूखे कानीः शुभं धाः
 निमक श्वाभं गात्र स्या मूक वा नाहादिनां सिनिश्खिनिश्खाहा ॥ नूयद वा रुवमि ॥ अं जीं वी कूं रुट ॥
 चिरु २ स्वाहा ॥ श्रुनने मरु नय क्रिया दे ॥ दधिवि नस्यमि ॥ कि नरुपय मूक ॥ ॥ अं नद नस्वामि नाणे
 लाका धिपनयः कूरु २ गङ्ग २ रुक्म २ नरु नागान् सिनिश्ना हाय २ रूं २ रुट २ जीं २ स्वाहा ॥ नरु नागडक
 सा ऊय मरु ॥ अं श्रु नन रूं रुट स्वाहा ॥ उदकपनि कृणु नरु यथा यथः नरु नाग नाहन रुवमि ॥

७
 हाननी ५ गुरुगण नक्षत्रनीटगाथकमवस चाठ अंश यागिनी या नाम ह आगं गुनि १ वेता २ अंगु नि ३ यता ४
 मंगु नि ५ याता अंगु नि ६ यं गागथक कृहि नि नदि चकगा थक स ड प दि ग रु का या दय क या स न न अ धि क का यः
 इ नाग गाथक स श श्री सा ध न स ला या ले क स म मू च य ना म स मा र्क ॥ ग म अ मां गु लि या नां क नि स गु लि या
 नां य व का का य अंगु लि क्ति न चो वा थ या वे पा उ या य कि वा स् व वा थ थ्यं रु आ ग रु स गु लि या अंगु लि क्ति न चो य व रु न ठा न
 वा थ्य म मा ल रु नी ग द व या स दू धा य क हा न खान का ॥ व न रा उ या स दू धा य अ स न स ल न का पी ठि रा ग न थ ल क स सं द रा
 ग रु ठि या स दू धा य च द म लु ल न थ स दू धा या म हा दी य या व य गा थ २ रु ज सं ला च क य थी आ प रु ज वा यू थ क न दी य पि ना धा

नथ सु दू धा या रु

२ अथ दक्षपिषु विधिमाह गारुसिस चेत्यदयक चानं कजं दिनं कजं दडाया जजस इदसली नय खजं सलं खसली नया पूजारुः
 लजय जलपाण्डू रघुपाण्डू जाकिरनगा ॥ मुनिगाजं वरु कर्ज न्यां स्व नृपं जलपाण्डु मिदं पूष्या कर्न नमशाजं दू रघुपाण्डु मिदं पूः
 व्या कर्न नमशा ॥ चेत्यस्क कि क नगाजं सहा भम भा ना धि प मि दू र्ग मि प नि ध व ध न चेत्य रु दान क दू र्दं पूष्या कर्न नमशा स्नाना
 जं सहा भम भा ना धि प मि दू र्ग मि प नि धा ध न चेत्य रु दान क वं व जा द क रू स्ना हा ॥ द व अ धि स न गा जं न मा रु ग व रु वं ना व न प रु क
 रु ना जा य क था ग ना या रू क स न्य कू नू द्या य ॥ ग य था गा जं गु अ २ स म य २ भा क २ दान २ स मा ना य नि ना न भ नि ना कू न नि वी हः
 ज ह भ व मि स हा रु ज स र्व नू द्या ना धि स ना धि मि क स्ना हा ॥ ध ल क रि क गा जं वूं आं जि र्वं रू ॥ इ द रु गा जं आं आं र्वं रू ॥ य था दि जा रु मा

२ दक्षपिषु विधिमा

५५
 यनपिष्टुसुधा १ ॥ अथ यथा लिङ्गा अमृक नाम ध्यायद्विनि यचक्र नुरु वसिध्वर्थे द्विनि यपिष्टुसुधा २ ॥ अथ ० रु
 किय नासिका सिध्वर्थे रु किय पिष्टुसुधा ३ ॥ चतुर्थे अङ्ग सिध्वर्थे चतुर्थे पिष्टुसुधा ४ ॥ यथ मरुदय सिध्वर्थे
 यथ मरुदय पिष्टुसुधा ५ ॥ यथ मरुदय सिध्वर्थे यथ मरुदय पिष्टुसुधा ६ ॥ यथ मरुदय सिध्वर्थे यथ मरुदय पिष्टुसुधा ७ ॥
 ८ ॥ अथ मरुदय सिध्वर्थे अथ मरुदय पिष्टुसुधा ९ ॥ नवमया दसिध्वर्थे नवमया पिष्टुसुधा १० ॥ दशमया म
 सिध्वर्थे दशमया पिष्टुसुधा ११ ॥ दिन २ या निमिरु विलिखया यथा हा मृक काले खका पाल म पा ल वि हा मः
 ध्यानाया लंख द्रु स क तां थस्य ॥ कायना लंख विय ॥ ॥ वाक् ॥ पथ म सि ना म धि द्विनि यचक्र रु किय नासिका चतुर्थे

५

५६
 अथ यथा लिङ्गा अमृक नाम ध्यायद्विनि यचक्र नुरु वसिध्वर्थे द्विनि यपिष्टुसुधा १ ॥ अथ ० रु
 किय नासिका सिध्वर्थे रु किय पिष्टुसुधा २ ॥ चतुर्थे अङ्ग सिध्वर्थे चतुर्थे पिष्टुसुधा ३ ॥ यथ मरुदय सिध्वर्थे
 यथ मरुदय पिष्टुसुधा ४ ॥ यथ मरुदय सिध्वर्थे यथ मरुदय पिष्टुसुधा ५ ॥ यथ मरुदय सिध्वर्थे यथ मरुदय पिष्टुसुधा ६ ॥
 ७ ॥ अथ मरुदय सिध्वर्थे अथ मरुदय पिष्टुसुधा ८ ॥ नवमया दसिध्वर्थे नवमया पिष्टुसुधा ९ ॥ दशमया म
 सिध्वर्थे दशमया पिष्टुसुधा १० ॥ दिन २ या निमिरु विलिखया यथा हा मृक काले खका पाल म पा ल वि हा मः
 ध्यानाया लंख द्रु स क तां थस्य ॥ कायना लंख विय ॥ ॥ वाक् ॥ पथ म सि ना म धि द्विनि यचक्र रु किय नासिका चतुर्थे

१०

स्वानयिषुगच्छन्काकपिषुगच्छन्पिषुगच्छन्वाक॥वाक॥काकपिषुप्रदानेनकायष्टृष्टिंचरुजानिः
संगसंगनाथेवत्सात्काकपिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥
स्वानयिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥
दक्षपिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥
वृत्तिदक्षपिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥पिषुसंप्रकासित्वध्वा॥

DH 65-3

三

१५५ गिजेनेयाखकनेविधि॥

0465-4

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो श्री सूर्याय ॥ ॥ कायां गुणमस्तु लदनकलं खवल्लिख्य यथाथ नलिः ॥ अकयासु ग्वमयनं लाश कि
पूच १२ कर्म पूजा लावना ॥ ॥ ओं स्वरावसुखाद्यादि ॥ ॥ कर्म १८ कमलमध्वजं कायं सूर्य विम्विरो वा न
कूदस्तु द्विरे जासु फासु नथ मा नूद्वि व ऊ सूर्य विरावथ न ॥ ॥ यनस्वानवायक ॥ ॥ ओं दी वा क जाय व ऊ पूः
पीप कि सु स्वाहा ॥ मध्व ॥ ओं आदित्याय ० ॥ हु व ॥ ॥ ओं सूर्याय ० ॥ ख डाम ॥ ओं आ १ रुं दाय ० ॥ थ डान ॥ ओं आ १ नी
लाय ० ॥ ऊ डाम ॥ ओं आ १ हा हा काय ० ॥ पूर्व ॥ ओं आ १ जादि नाय ० ॥ द किं ॥ ओं आ १ वादि क्षय ० ॥ प र्दि ॥ ओं आ १ वावस्य
कय ० ॥ ड रु ॥ ओं आ १ रार्ग वाय ० ॥ अग्ने ॥ ओं आ १ हा निश्च वाय ० ॥ ने अ ॥ ओं आ १ ना द्रव ० ॥ वायू ॥ ओं आ १ क रु व ० ॥

ॐ ह्रीं ॥ गायननकृत्तनवाय ॥ ॥ अं ह्रीं काय वज्रपूषी प्रणि कृत्वा हा ॥ जी० म० अ० पू० ध० अ० ॥ पूर्व ॥
 अं मद्याय ० पूर्व ० उ० ह० चि० स्वा० वि० ॥ दक्षि ॥ अं अनजादाय ० ऊ० म० पू० उ० अ० अ० ॥ पश्चि ॥ अं धनदा
 य ० अ० पू० उ० न० अ० क० ॥ उरु न ॥ ॥ थस द्वादहात्राणि ॥ ॐ आदिलोकपालवाय ॥ ॥ थसि पूजा
 रा० धू० स्त्रा० च० ज० स्त्री० ने० दी० ॥ य० अ० द० ॥ ॥ थलि नाय ॥ अ० क० य० क० म० न० ल० द्वा ॥ स्त्री० न० अ० य०
 वा ॥ अं नमो गवतः आदित्याय ॥ काश्यप गवाय ॥ आदित्य गर्भं रूमाय कलिं गदहारा वाय ॥ अ० न० स
 हि नाय ॥ कर्कट नय नमो ग० व० च० क० क० सु० म० ह० दृ० षा० य० न० क० वा० स० न० क० पू० षा० ऊ० षा० वि० न० प्री० या० य० पु० न० ग० मा० च० थ०

मातृदाय ॥ दवदानवकृत्तुः किन्नरसहीनाय ॥ अवतत्ररुगवन ॥ मनूयानां हि नार्थय ॥ ॐ दं गृहमस्तु
 लमश्च ॥ अनूपविष्णुः ॥ ॐ दं अ० क० ग० ध० य० ध० य० दी० पा० प० हा० न० च० प्र० नि० गृ० क० नां ॥ नमो भुक्तयस्तु क्रियं न० क० स
 प्रिक्तिको रुगवान् ॥ किपुर्लि च० क० न० दानयन ॥ रु० ग० मि० काम० नार्थ ॥ ॐ रु० क० न० न० क० म० अ० अ० ॥ दी० वा० क०
 व० न० च० षा० य० आदित्याय ॥ अ० धी० प्र० नि० कृ० त्वा० हा० ॥ ॥ धी० व० पू० जा० ॥ ॥ मु० नि० ॥ दधि० षा० व० रु० खा० वा० रू० की० वा
 दानत्ररुर्वी नमामि ॥ ह० न० द० ह० ह० रू० म० क० द० रु० ष० ली० ॥ ॥ रु० ल० ना० न० जा० दि० षा० य० क० ॥ ॥ कि० न० न० क०
 अं ऊ० वा० क० सु० म० ह० का० ह० दी० य० द० ह० म० हा० दू० कि० नमामि सर्वं ॥ प्री० य० षा० मा० मि० दि० वा० क० न० ॥ ॥ थलि० ख० क० न० ॥

१२

रथाना श्री स्वामिनां पीत्या स्वामिरुक्ता न चाननी। सहस्रमिस्वर्यंगत्वा सहस्रार्धपार्श्वकवान् ॥
 गवक्कमुकुननं थय। स्वामिया प्राक्षालकुरुगुस्वयाडा थय। स्वामिडा पीतिने स्वामी रुक्मिण स्वामि वसंत
 गिन पुनूखडा नार्यः सकिडा हाय। प्राक्षालकुरुगुस्वयाडा थय। पुनूखडा सगनडा ॥ १ ॥ अर्वचि
 रुसमूखा थ। स्वामिनाममनूस्मवंगदुमिजकुरुने स्वामि सहस्रमिनी ॥ ॥ थगुलिचिरुजायलः
 पाय। स्वामी यानामकायाय। अकचिरुनस्वामी आसगनसकिजनी ॥ २ ॥ अन्नवजकिरुकावंगहातिरु
 वनंमदापदपदसमधस्यरुलंप्राप्तिनिस्थ ॥ ॥ रुनं गवक्कमुकुननं थय। स्वामिडा सहस्रया हावना

२

यंप्राक्षालकुरुगुस्वयाडा थय। अकचिरुनस्वामी आसगनसकिजनी ॥ ॥ थगुलिचिरुजायलः
 नायारुल यजायनकांनं यजायपुर्णिः अन्नमधयरुया हागुयायारुलवाक रुनं यजायपुर्णिः सुवर्णनूपकि
 दानया हा रुलजाकः थथिगुपूस्थियाडा रुनासमचास थय या हाय यनमधनियाना कायाडा पुनूखडा ना
 यंसगननसकिजनी नकायान अकिपू स्थलाकथयका काजस अकचिरुनजानमाला ॥ ॥ पननवा
 नूगुकाते नूगुसमय गतिपठननामनगवस। सिंहके गुधकधया क्रजाजा नूक्रदयाचां थ
 मनाजा महांसुख जानडै नंचान। लिपगस देवयाया गन निबन का नाकनू जयाडा नूगुजुली ॥ ॥

गत्वात् प्रकृती कां का नैव सह गमिनी ॥ एगिवु गत्वा मिर की शुची मित्रा महावु गि ॥ थथिं कृति
ह के गु ना जाया म्ही सुत्र कृती नाम नाधी दया डी चान थ नाधी गथिं कृति प्रसा खा मिया के महा ह कि
या सुगु गिवु ना धर्म से सदां विष्ठा क कृति शुचि गील डै या डी स्व लाला क नृ गि हिन थथिं कृति नानि न
उथिं प्रसं साल ध के लाल पा डी ग डी धन है कि ला वन स्वामि डी सं स गृ डै या डी स गि डी न ॥ ॥ य गु
उ गु कुल जा गो द म्हा लो ग गु रै व पश्च द के प्र कृति ये लै वु गं कृती दि व डी यो ॥ ॥ थ गु लि धर्म या प्र
ला वन डी कृति ह के गु ना जा सुत्र कृती नानि निष्कं ग डी धन कल स जा ग डी या गन र डी म डी ल न र निष्कं

DH-65-4

DH 65-5

रजं नमः श्री चक्र सत्त्व नाय ॥ प्रवं मया धुं भ कृति नमय रु ग वाना सर्व कथा ग क काय वा क चिरु वरु या गि नी रु
वष विरु रु ना ॥ अथा मा न रु सी व श्रु म रु जाय स्य ल कृती ॥ म धुल वरु य पूर्व य आ द व का ल कं गि वि ग क न कृ
उष म हा द धि रु म व ॥ च रु य १० म धु प ल न ॥ ध म न च म ना न म ॥ क रु र्वा क वि धि नां पूर्व म वा धि का न य
रु ॥ य व रु गि नी ल न पू य य ल रु ॥ ॥ रं श्री व रु ह रु नू क रुं रुं फ रु ॥ ॥ ल रु म कं जाय थि ला द र्शी स न रु हा म थ
रु ॥ लो कि क लो को रु न सि धि श्री रू व गि ना न्य था ॥ ॥ ग क न रु रु सी कि रू म धु ल वरु य स दा ॥ सा ध ल रु म वि
रु न उ य रु द य स दा रु य ॥ ॥ रं रू ह रुं रुं फ रु ॥ ॥ उ य न रु रु जाय थ द र्शी स न रु हा म थ ॥ व पु न वि धा न रु ॥

वा

वाक् सिद्धि कुसाधयन् ॥ ॥ कूं ऊ स क ऊ ला ध य व रू य त म लु लं धु रं ॥ ऊ य त म क म वि द्धि न च नु र्म र ख न ऊ पि नी ॥
 ओं स क नि २ रूं २ फट् ॥ ओं गू क २ रूं २ फट् ॥ ओं गू का प य २ रूं २ फट् ॥ ओं आ न य हा र ग व न् वि श्या ना ऊ रूं २ रूं ॥ ॥
 च नु व कू जा य धा गि द धां स न रु हा म य न् ॥ ॥ कि य र्छि च व स धा स त्वा र्थ सि द्धि मे व च ॥ ॥ म हा द धि क द ग त्वा म
 लु ल क य व रू य ऊ य द वी म कू ल कू ल वि श्व क म य थ क वि धि र्म य रूं द धां स न रु हा म य न् ॥ ॥ ओं श्री व क
 वे ना च नी य रूं २ फट् स्वा हा ॥ ॥ लो कि क स र्व सि द्धि कू च नु र्म र ख म कू जा पि नी ॥ ॥ न म लु लं क त्वा ॥ ॥ पूर्व ना कू वि
 वि धा वि न् ॥ सा ध य त्प क न म कू ऊ य व य ल रूं च द धां स हा म य क म सा ध य स वि नि श्चि ता वि द्ध यो चो क र्ने क माः

मा न न क वि श्व क शा सि ध्व क जा य मा कू ल व कू स त्व व चा य थ ॥ च नु य थ म लु लं व रू यि त्वा सा ध य रू म नं की या ॥
 ऊ य ऊ कि नी म कू म य क म कू सि ध्व क ॥ ॥ ओं ऊ कि नी य रूं २ फट् ॥ ॥ द धा स न रु हा म य सि द्धि रू क व ना न सा
 ध नी वि हा य म लु य रूं न व रू य त म लु लं व रूं ऊ य ला मा या म कू ल क म कू ल नि श्चि र्नी द धा स न रु हा म य द वी सि ध्व
 क ना कू र्म य ॥ ॥ ओं ला म रूं २ रूं २ रूं स्वा हा ॥ ॥ ऊ न पा द य य क व शि क न ध म व च ॥ ॥ न म ना व म वि क नः
 म लु लं व रू य त्वा ॥ ॥ ख लु ना हा दि म कू सा ध य द्वि धि र्म य रूं ॥ ॥ ओं ख लु ना रूं २ रूं २ रूं स्वा हा ॥ ॥ ऊ य व कू ल
 द धा स न रु हा म य न् ॥ ॥ य कू य कू नि सा ध नी पू ष्य धू प क ग ध क व लि न व द म व चो वा न यो न वि श्व क य क क त्वा म

लं वनं ऊयन् ॥ नृपिनी मन्त्रः ॥ लं कं नृनिम्बिनी ॥ दक्षासनहामयत्तवी ॥ सिद्धकनारुसंसय ॥ ॥ अं नृपिनी यद् २ रु
ठ्ठाहा ॥ ॥ गिरुद्यनविसेषरुः मजामरु नृनादिर्गः उत्सवसमयसंपापकायापे स्वस्त्यनषसाधयनयस्य
कर्मविष्ठाषनः कस्यवर्द्धदिनकथेन ॥ आसनदवनाकारं मरुपूजनसंनकः संक्रान्तवलकथेन ॥ अंसंक्रा
मरुजायनः अं नृनृनृकसजदायकी ॥ नृपिनियमयागनः साधयसिद्धिमाप्नुयात् ॥ ॥ दिग्बेश्वरुपा
नकालः चरुमूखमरुसमूचन ॥ ॥ अंसंक्रान्तिमूकः रुद्र ॥ अंगुका २ रुद्र २ रुद्र ॥ अंगुकापय २ रुद्र २
रुद्र ॥ अं आनयेद्वारुंगं वनं विद्योना रुद्र २ रुद्र ॥ अंगुकापयदि रुद्र २ रुद्र ॥ अंगुकापयदि रुद्र २ रुद्र ॥ अंगुका

[illegible]

नानाकर्मरुत्नादयः॥ ॥ अं नमः ॥ नवातिनिमस्रकालानूचनाय॥ कथथा॥ अं च न २ प च न २
 लालयदवलिगंसाहा॥ स्यावायूकं कृत्वा॥ अर्द्धनाशोलिंगगृहित्वा॥ नावजयथावगच्छति॥ पिष्टु कृति॥
 अं नाम॥ धूमं कृत्वा विष्टु कृति॥ रुन २ पे च २ देवदरुमानयस्वाहा॥ वामाचननञ्जकनसूत्रमूलिखि
 त्वा॥ कस्यास्य कयकानकीं कोचवृत्तयौ लिखे मध्यमं यदः॥ शोकास्य जपेन वसिष्ठेन मूरुमं॥ ॥
 अवेजक्रोठमहावजः रुन २ देह २ पे च २ विधेयपाशोः॥ मायय २ रुं रुद॥ एनद्योपवाहयद्वर्षेति॥ वर्षायेन
 विधिः॥ ॥ अंगगश्लिगगसाहा॥ सफजपं कृत्वा॥ मुखवधनं कृत्वा रुति॥ ॥ अं मे कतिष्ठमिमुका

DH65-5

३

पूनरुक्ता॥ लीनः सकिः॥ पात्तुः वृद्धकस्तु॥ १ ॥ दकं॥ ॥ अर्द्धनीलः॥ रुतः॥ मानिकः॥ सस्तु॥ मइसा॥ अहा॥ ॥ मुखसाधना॥
 नवं॥ लुकमरः॥ जाकिकास्तु॥ च॥ अला॥ ॥ इति॥ उत्पानशाकिष्ठमं॥ ॥

१

१८ त्यागकलदासैः कृष्णालिङ्गि कृष्णार्थः पूजायाय शाययकविधिइत्या॥ ॥ स्वस्वमकनलवना॥ धूप॥ श्रीखलुः शुभ
 श्रीगुनूः सिलाः कृष्णदा॥ ॥ चयन॥ श्रीखलुः श्रीगुनूः श्रीनचं नकचयः कृष्णनि॥ ऊऊमवस्तुः ययवर्ष॥ ॥ स्नान॥ रायस्ना
 नः अयजिनाः बुद्धरुनः छाउवडाः कृष्णमावलिः॥ ॥ पंचपक्वाना॥ नदूआः चपनाखः सथः अकफेनि॥ ॥ इद्रधउ
 धलः साखः चाक॥ ॥ पंचपानदयक॥ साखलनिसकूय॥ भुथिः मलचः कर्पल॥ ॥ इद्रकूय॥ धलः साखः जिहल
 जाकिकास॥ ॥ पालूकिसकूय॥ मलचः पिपिः भुथः ०० मंः सनपषः॥ ॥ पाउकिसकूय॥ संसः सपाउः शयचं निमो
 नाविंग॥ ॥ वायूकिसकूय॥ इल्लालंरुः पाडुः धाकनः धीयंगुः कडुक॥ ॥ ससाहल॥ अमरुनसुम्बाचः धालः वयसि॥